



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रागज्योतिष

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका :: चतुर्थ अंक :: वर्ष 2025



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) असम का कार्यालय
गुवाहाटी - 781029

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351
तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,
केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि
अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से;
अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से
अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे,

उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे;

अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए;

अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल

और प्रभावशाली बनाते हुए

राजभाषा-हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे।

हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति

सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिंद !

चलो मिलकर

मुहिम चलाये,
आज ही से.


हिंदी अपनाए

प्रागज्योतिष

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका :: चतुर्थ अंक :: वर्ष 2025



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

:: प्रकाशक ::

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, असम
गुवाहाटी - 781029

:: मूल्य ::

राजभाषा के प्रति निष्ठा

प्रागज्योतिष परिवार

मुख्य संरक्षक : डॉ. गौरव कुमार
महालेखाकार

संरक्षक : श्री संजय कुमार सिन्हा
उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रधान संपादक : सुश्री मौसमी चौधरी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

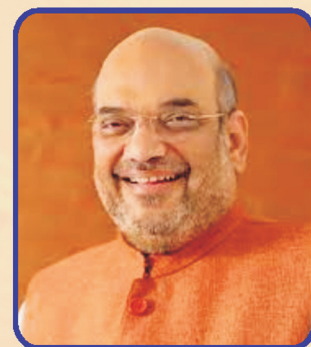
सह संपादक : श्री प्रतीक कुमार
वरिष्ठ अनुवादक
श्री रवि कुमार
कनिष्ठ अनुवादक
श्री विवेक कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री प्रीति राजभर
कनिष्ठ अनुवादक

अंक : चतुर्थ

प्रकाशन : महालेखाकार (ले. एवं हक.) असम का कार्यालय, गुवाहाटी

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा—प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान—विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल—मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत—प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव—देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार-प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदयों को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

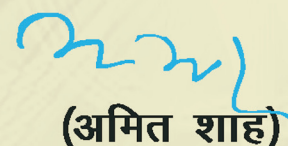
आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2025


(अमित शाह)



मुख्य संरक्षक की कलम से....

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "प्रागज्योतिष" का चतुर्थ अंक प्रकाशित हो रहा है। यह अंक हमारे सहकर्मियों के विचारों, अनुभवों और रचनात्मक लेखन का संकलन है, जो हिंदी के प्रति उनकी आत्मीयता और समर्पण का सजीव प्रमाण प्रस्तुत करता है।

हिंदी केवल राजभाषा नहीं है; यह हमारे राष्ट्रीय चिंतन की धारा है, जो विविधता में एकता का संदेश देती है। यह वह भाषा है जो हमें सरलता से जोड़ती है, हमारी संस्कृति का दर्पण है और हमारे कार्यों को प्रभावशीलता प्रदान करती है। जब हम हिंदी में कार्य करते हैं, तो हम केवल एक भाषा का प्रयोग नहीं करते, बल्कि अपनी राष्ट्रीय पहचान को और अधिक सुदृढ़ करते हैं।

आज हिंदी का स्वरूप केवल साहित्य और संवाद तक सीमित नहीं है। यह प्रशासन, विज्ञान, तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। आवश्यकता है कि हम सभी हिंदी को आधुनिक माध्यमों— ई-ऑफिस, कंप्यूटरीकृत कार्यप्रणाली, तथा सूचना प्रौद्योगिकी में सहज रूप से प्रयोग करें। इससे न केवल राजभाषा का दायरा विस्तृत होगा, बल्कि हिंदी भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बन सकेगी।

"प्रागज्योतिष" का यह अंक इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों को निरंतर हिंदी में कार्य करने, लिखने और संवाद करने की प्रेरणा देती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी सहयोगियों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डॉ. गौरव कुमार)

महालेखाकार (ले. एवं हक.)

संरक्षक की कलम से.....



इस कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "प्रागज्योतिष" के चतुर्थ अंक का प्रकाशन इस कार्यालय के लिए गौरव का विषय है। हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका के अनवरत प्रकाशन का यह चौथा पड़ाव है। कार्यालयीन कार्यों और निजी जीवन की व्यस्तताओं से समय निकालते हुए कर्मचारियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है जो कि प्रशंसनीय है। रचनाओं की विविधता की झलक हमारे कार्यालय के समावेशी परिचय को दर्शाती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका परिवार को बधाई देता हूँ। पत्रिका के उत्तरोत्तर एवं गुणात्मक विकास हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

जय हिन्द, जय हिंदी

(संजय कुमार सिन्हा)
उप महालेखाकार (प्रशासन)



प्रधान संपादक की कलम से



नए कलेवर एवं नए विषय के साथ हिंदी गृह पत्रिका "प्रागज्योतिष" का यह चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। हमारा यह प्रयास उन चेष्टावान रचनाकारों के योगदान के बिना शायद संभव ही न हो पाता। उनका यह योगदान जिस तरह से राजभाषा हिन्दी के प्रति उनके स्नेह, अभिरूचि को प्रकट करती है, यह वास्तव में प्रशंसनीय है। इस पत्रिका की रचनाएं कभी हसौएंगी, तो कभी ज्ञानवर्धन करेगी, तो कभी-कभी सहृदय पाठकों को स्वयं से ही जोड़ लेंगी, क्योंकि रचनाओं के मूल में प्रेम है..! भावना है..! यथार्थ है..!

इन सब के केंद्र में सबसे पहले कार्यालय प्रमुख की सहभागिता और मार्गदर्शन ही रहा है जिससे इस प्रयास को साकार रूप दिया जा सका है।

प्रशासनिक और साहित्यिक कलेवर को लपेटे हुए "प्रागज्योतिष" के इस अंक में अपना योगदान देने वाले संपादक मंडल भी बधाई के पात्र हैं। आशा है कि आपको : "प्रागज्योतिष" का यह अंक पसंद आएगा। "प्रागज्योतिष" को हर दृष्टि से बेहतर बनाने के लिए हम कृतसंकल्प हैं और इस पर आपके सुझावों का भी हार्दिक स्वागत करते हैं।

"प्रागज्योतिष" के इस अंक और आने वाली भावी अंकों के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएँ।

धन्यवाद !

जय हिन्द !

(मौसमी चौधरी)

सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

◆ असंभव कुछ भी नहीं..	श्री रवि कुमार	1
◆ समुदाय और इसकी विशेषता	श्री दीपक कुमार वर्णवाल	4
◆ प्रागज्योतिषपुर: उत्तर पूर्व का एक पौराणिक साम्राज्य	श्री धीराज कुमार दास	6
◆ कैसे वे दिन बीत गए ...	सुश्री प्रीति राजभर	8
◆ अनाथालय की वो खामोश दीवारें	श्री संदीप	9
◆ जमाने में और भी गम हैं	सुश्री निकिता चक्रवर्ती	13
◆ कामकाजी महिलाओं की जीवन की चुनौतियाँ	सुश्री प्रीति राजभर	14
◆ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य, शिक्षा और समस्याएँ	श्री अंकित	16
◆ भक्ति की शक्ति	सुश्री दीपप्रिया कुमारी वर्णवाल	18
◆ पारंपरिक असमिया पोशाक और आभूषण	सुश्री पल्लवी दास	21
◆ प्रेम की तलाश: एक अंतर्थात्रा	श्री विशाल कुमार सिंह	24
◆ प्रताड़ना	श्री योगेश	25
◆ रेत-सी जिंदगी	श्रीमती मीनाक्षी चक्रवर्ती	27
◆ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की आवाज	श्री प्रखर सक्सेना	28
◆ अयोध्या से जनकपुर का सफर	श्री योगेंद्र कुमार	30
◆ कार्यालय का डिजिटलीकरण	श्री राहुल कुमार	32
◆ 'वोकल फॉर लोकल' अभियान और आत्मनिर्भर भारत	सुश्री काजल कुमारी	34
◆ खेल आखिर क्यों ?	सुश्री कुमारी सोनिया	37
◆ कला, साहित्य और विज्ञान: भारत की त्रिसूत्रीय आत्मा	सुश्री सुरभि कुमारी सिंह	38
◆ मेघालय टूर: विस्तृत विवरण	श्री राजू अधिकारी	40
◆ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बनाम इंसानी बुद्धि	सुश्री पूनम	44

असंभव कुछ भी नहीं..



श्री रवि कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

कठिन राहें भी आसान बनेगी,
मेहनत से मंजिल पहचान बनेगी।
आँधी-तूफान चाहे कितने सही,
हिम्मत कहे-असंभव कुछ भी नहीं।
विश्वास रखो, बढ़ते ही जाओ,
जीवन को नई उँचाई दिलाओ।

मानव जीवन में असंभव शब्द केवल एक भ्रम है। यदि मनुष्य दृढ़ निश्चय, अथक परिश्रम और अदम्य साहस के साथ किसी कार्य को करने की ठान ले तो कोई भी बाधा उसे रोक नहीं सकती है। इसी सत्य को अपने जीवन से सिद्ध किया था बिहार के गया जिले के एक साधारण व्यक्ति दशरथ मांझी ने। उन्होंने अकेले दम पर पहाड़ काटकर रास्ता बना दिया और यह साबित कर दिया कि 'असंभव कुछ भी नहीं'। यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि दशरथ मांझी जैसे व्यक्ति के जीवन से निकली अमर सीख है, जीवन का सत्य और दर्शन है। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि यदि इंसान ठान लें, तो पहाड़ भी झुक सकते हैं। यह संदेश हमें कठिनाइयों से लड़ने, सपनों को पूरा करने और समाज के हित में कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ी शक्ति है उसका विश्वास और परिश्रम। इतिहास, विज्ञान, साहित्य, समाज, खेल- हर क्षेत्र में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी संभव हुए हैं। जब मनुष्य पूरी निष्ठा और

परिश्रम से लग जाता है, तो पहाड़ जैसी मुश्किलें भी रेत के कणों की तरह बिखर जाती हैं।

असंभव शब्द का वास्तविक अर्थ:

असंभव कोई स्थाई सत्य नहीं है, बल्कि हमारी सीमित सोच और डर का परिणाम है। असंभव का अर्थ है- जो संभव न हो लेकिन इतिहास साक्षी है कि जिस चीज को असंभव कहा गया, वहीं से मानव की उपलब्धियाँ शुरू हुईं। चंद्रमा पर जाना, गहरे समुद्र में उतरना, लाइलाज बीमारियों का इलाज ढूँढना आदि- ये सब कभी असंभव माने जाते थे पर आज ये मानवीय परिश्रम से संभव हो चुके हैं। असंभव और संभव के बीच अंतर सिर्फ विश्वास का होता है। इस दुनिया में असंभव कुछ नहीं होता है, ये सिर्फ परिकल्पनाएँ हैं। ये हमारे मस्तिष्क में रहता है। दरअसल, ये अवतरित तब होता है जब आप इसे अधिक बार सोचते हैं। जितनी बार अधिक सोचते हैं, उतनी बार ये मजबूती के साथ आपके सामने आकर खड़ा हो जाता है। आप जिस चीज की कल्पना कर सकते हैं, उसकी रचना की जा सकती है। मनुष्य के दृढ़ निश्चय के आगे कुछ भी असंभव नहीं रहता। जब भी कोई जीव दृढ़ संकल्प होकर, एक दृढ़ विश्वास के साथ किसी भी काम का बीड़ा उठाता है तो दैवीय शक्तियों को उसकी सहायता के लिए स्वयं ही आना पड़ता है। यही कर्म का दैविक विधान है। इस संसार में जो व्यक्ति अपने मन की भावनाओं पर नियंत्रण कर लेता है और उसे काबू करना सीख लेता है, उस व्यक्ति के लिए इस संसार में असंभव कुछ भी नहीं

है। इस दुनिया में अधिकांशतः लोग अपने जीवन में उतना ही प्राप्त कर पाते हैं जहाँ तक वे खुद के बारे में सोचते हैं, कभी तो उतना भी नहीं कर पाते हैं। ये सिर्फ इसलिए होता है क्योंकि हमारे मस्तिष्क में एक धारणा बनी हुई है कि हम इतना ही कर सकते हैं। इसके लिए पहले आपको स्वयं बदलना होगा। आप दुनिया को नहीं बदल सकते हैं क्योंकि वो आपके हाथ में नहीं है परंतु आपके मस्तिष्क के ऊपर आपका शत-प्रतिशत नियंत्रण है। आपके सिवाय कोई आपके जीवन, आपकी वैचारिक प्रक्रिया को नियंत्रित नहीं कर सकता है।

सवाल यह उठता है कि जितना हम सोच पाते हैं क्या उससे ज्यादा हम अपने जीवन में प्राप्त कर सकते हैं? अगर हाँ तो कैसे? पहले सोचा जाता था कि एकदिवसीय क्रिकेट मैच में कोई खिलाड़ी 200 रन नहीं बना सकता है, ये असंभव है। 24 फरवरी, 2010 को दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध ग्वालियर के मैदान में सचिन तेंदुलकर ने एकदिवसीय क्रिकेट का पहला दोहरा शतक बनाकर इस धारणा को तोड़ा। इसके कुछ ही वर्षों के बाद वीरेंद्र सहवाग, रोहित शर्मा, क्रिस गेल, मार्टिन गुप्टिल ने सचिन के बनाए हुए रिकार्ड को भी तोड़ दिया। कोई कार्य जब तक नहीं होता है तभी तक लगता है कि ये नहीं हो सकता है, जब हो जाता है तब बाकी लोगों को ये उम्मीद दिखती है कि दूसरे कर सकते हैं तो मैं भी कर सकता हूँ। योजना सिर्फ कल्पना भी लगे तो भी उस पर विश्वास करो और उसे सच बना दो। हर बड़े कार्य से पहले उसका सपना देखा जाता है और फिर उसे मूर्त रूप दिया जाता है। हर सफलता के पीछे इच्छाशक्ति ही एक मूलमंत्र है। इच्छा करो, दृढ़ता से चाहो और फिर उसके लिए मर मिटो, विजय सदा आपका वरण करेगी।

मनुष्य का जीवन चुनौतियों से भरा हुआ है। जब-जब मनुष्य ने किसी कार्य को असंभव समझकर छोड़ दिया, तब-तब उसकी प्रगति रुक गई लेकिन जब उसने दृढ़ संकल्प और परिश्रम से असंभव को चुनौती दी, तब इतिहास ने उसे महानता के शिखर पर बैठाया। कठिनाई और असंभव के बीच केवल हमारी सोच

और साहस का अंतर होता है। यदि हम ठान लें तो कोई भी लक्ष्य हमारी पहुँच से बाहर नहीं है।

भारत और विश्व इतिहास के उदाहरण:

- ♦ महात्मा गाँधी- अहिंसा और सत्याग्रह के बल पर अंग्रेजों को हराना दुनिया को असंभव लगता था लेकिन उन्होंने यह कर दिखाया।
- ♦ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई- एक स्त्री का अंग्रेजों की विशाल सेना से भिड़ना असंभव प्रतीत होता था लेकिन लक्ष्मीबाई ने अपने अदम्य साहस और शौर्य से अंग्रेजों को हिलाकर इतिहास रच दिया।
- ♦ चाणक्य और चंद्रगुप्त- एक छोटे बालक को अपने संकल्प से भारत का सम्राट बना देना।
- ♦ स्वामी विवेकानंद- शिकागो धर्म संसद में अपने विचारों से भारत की आध्यात्मिक शक्ति को विश्व में स्थापित करना।
- ♦ नेल्सन मंडेला- 27 साल जेल में रहकर भी रंगभेद समाप्त करने की लड़ाई जीतना।
- ♦ अब्राहम लिंकन- कई असफलताओं के बाद भी अमेरिका का राष्ट्रपति बनना।

विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में असंभव से संभव:

- ♦ राइट ब्रदर्स ने उड़ने का सपना साकार किया।
- ♦ थॉमस एडिसन ने हजारों बार असफल होकर भी बल्ब आविष्कार किया।
- ♦ अंतरिक्ष विज्ञान-कभी मनुष्य के लिए चाँद पर जाना असंभव था लेकिन 1969 में नील आर्मस्ट्रॉंग ने यह कर दिखाया।
- ♦ भारत का मंगलयान- सबसे काम लागत में सफलता, जो विश्व को चौंका देने वाली थी।
- ♦ इंटरनेट, मोबाइल फोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए आई)- ये सब कभी असंभव सपनों की तरह लगते थे, लेकिन आज हर घर की हकीकत है।

- ♦ आज असंभव कुछ भी नहीं – विज्ञान और तकनीक की प्रगति से प्रतिपादित हो चुका है।

समाज सेवा और मानवीय उदाहरण:

- ♦ बाबा आमटे-कुष्ठ रोगियों के लिए सेवा का कार्य करके समाज की धारणा को बदल दिया।
- ♦ मदर टेरेसा- निःस्वार्थ सेवा का मार्ग अपनाकर असहाय और रोगियों की सेवा दुनिया को मानवता का संदेश दिया।

शिक्षा और परिश्रम की भूमिका-

- ♦ बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर- मन में दृढ़ संकल्प और मेहनत की ताकत से अत्यंत कठिनाइयों के बावजूद उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारतीय संविधान की रचना करना।
- ♦ डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम- साधारण परिवार से निकलकर 'मिसाइल मैन' और भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति बनना।

खेल जगत के उदाहरण-

- ♦ कपिल देव-1983 में वेस्टइंडीज को फाइनल में हराकर भारत को पहली बार विश्व कप दिलाना।
- ♦ सचिन तेंदुलकर- बचपन से क्रिकेट को जीकर, सौ अंतर्राष्ट्रीय शतक बनाना।
- ♦ मैरी कॉम- साधारण ग्रामीण पृष्ठभूमि से निकलकर विश्व विजेता मुक्केबाज बनना।
- ♦ मिलखा सिंह- 'फ्लाइंग सिख' के नाम से विख्यात।
- ♦ पी.टी. उषा- कठिनाइयों में भी एथलेटिक्स में भारत का नाम रौशन करना। उड़न परी के नाम से विख्यात।

साहित्य और कला में असंभव की विजय-

- ♦ सूरदास-नेत्रहीन होकर भी भक्ति साहित्य की अमूल्य रचना करना।
- ♦ तुलसीदास-समाज में रामचरितमानस जैसी अद्भूत रचना करना।

निष्कर्ष: जब एक छोटा-सा झरना संकल्प कर लेता है तो चट्टानों की छाती को चीरकर बाहर निकलता है। जब एक नन्हा-सा बीज उगने का संकल्प करता है तो पथरीली धरती से बाहर फुटकर निकलता है। एक बात सदैव स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी नियति जनित समस्या मानवीय क्षमताओं से बड़ी नहीं होती है। समस्या मात्र इतनी सी है कि अधिकतर लोग कठिनाइयों को केवल देखते रह जाते हैं किंतु कुछ लोग कठिनाइयों के बीच रहकर भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। इतिहास में केवल उन्हीं का नाम लिखा जाता है जो विषम से विषम परिस्थितियों में रहकर भी अपने लक्ष्य को दृष्टि में रखकर दैनिक समस्याओं में बिना उलझे लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को समूल सुलझा लेते हैं। इतिहास साक्षी है कि महान वही बन पाया है जिसने अपनी कठिनाइयों को आगे बढ़ने का अवसर बना दिया हो। जिसने अपनी कमियों को निर्बलता नहीं बल्कि अपनी शक्ति बना लिया हो। निर्णय लेने में साहस का परिचय दिखाना चाहिए। समस्या आपको खत्म करें, उससे पहले आप समस्या को खत्म कर दें, जड़ से मिटा दें उसको ताकि वो आपके लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न नहीं कर सके। जीवन में असंभव कुछ भी नहीं है। विश्वास मनुष्य के सफल जीवन का सूत्र है। सफल लोगों के जीवन के संस्मरण और घटनाएँ उनकी दृढ़ संकल्पशक्ति को उजागर करती हैं। मानव के मन में असंख्य शक्तियाँ भरी हैं और इन सारी शक्तियों में महानतम शक्ति है संकल्पशक्ति। संकल्प असंभव को भी संभव बना देता है।

असंभव तो बस मन का डर है,
साहस ही जीवन का आधार स्वर है।
जो परिश्रम करता, थमता कहीं नहीं,
हर सपना कहता-असंभव कुछ भी नहीं।
चुनौतियाँ झुकेगी तेरे समक्ष,
जीत होगी तेरी ही उत्कर्ष।



श्री दीपक कुमार वर्णवाल
सहायक लेखा अधिकारी

समुदाय और इसकी विशेषता

समुदाय व्यक्तियों का एक ऐसा बड़ा समूह है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के अंदर अपने जीवन की सभी सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। समुदाय को अंग्रेजी में 'COMMUNITY' कहते हैं जो कि दो शब्दों से मिलकर बना है: COM और MUNIS। COM का अर्थ है- एक साथ और MUNIS का अर्थ है- सेवा करना। अर्थात्, एक साथ मिलकर सेवा करना। इस तरह, समुदाय में रहने वाले लोग एक साथ रहते हैं और उनमें एक-दूसरे की मदद करने की भावना भी रहती है। चूँकि, यहाँ के लोग एक ही क्षेत्र में रहते हैं इसलिये उनके बीच सहनशीलता, घनिष्ठ संबंध आदि की भावनायें विकसित होती हैं। इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि केवल दो - चार लोग एक विशेष क्षेत्र में रहते हैं और अपनी सभी प्रमुख आवश्यकताओं को पूरा कर लेते हैं तो ऐसे संगठन को समुदाय नहीं कहा जा सकता है। समुदाय तो मानव का बहुत बड़ा समूह होता है जिनमें सदस्यों की संख्या सैकड़ों से लेकर लाखों तक में हो सकती है।

किंगस्लेय डेविस के अनुसार: 'समुदाय वह सबसे छोटा क्षेत्रीय समूह है जिसके अंतर्गत सामाजिक जीवन के सभी पहलू आ जाते हैं।' इसका तात्पर्य है कि समुदाय भी एक सामाजिक समूह है लेकिन यह समूह इतना बड़ा होता है कि व्यक्ति इसी के अंदर अपने जीवन की सभी प्रमुख आवश्यकताओं को पूरा कर लेता है।

बोगार्डस ने कहा है: 'समुदाय एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसमें कुछ मात्रा तक 'हम की भावना' होती है और वह एक

निश्चित क्षेत्र में निवास करता है।' इस परिभाषा से समुदाय की तीन विशेषताओं का पता चलता है- क) समुदाय व्यक्तियों का एक समूह है, ख) इस समूह के सभी सदस्यों में 'हम की भावना' पाई जाती है, तथा ग) यह समूह एक निश्चित भू-भाग में निवास करता है।

अतः उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि समुदाय व्यक्तियों का तुलनात्मक रूप से एक बड़ा समूह है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में सामुदायिकता की भावना द्वारा बनता है और इनमें रहने वाले लोग सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं।

समुदाय के प्रकार

लोगों की आबादी के अनुसार समुदाय को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है:

1. **ग्रामीण समुदाय:** जैसा कि नाम से ही विदित है कि यह समुदाय गाँव के जीवन से संबंधित है। अर्थात् यहाँ के लोगों का जीवन काफी सरल, सीधा और सामान्य होता है। यहाँ के लोग प्रकृत-प्रेमी होते हैं।
2. **नगरीय समुदाय:** यह समुदाय ग्रामीण समुदाय के ठीक विपरीत होता है। मतलब यह है कि जहाँ ग्रामीण समुदाय में लोगों की जनसंख्या काफी सीमित होती है वही नगर में रहने वाले लोगों की संख्या काफी अधिक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में यहाँ पर जीवन जीने की मूलभूत सुविधायें अधिक होती हैं। लोगों की सामाजिक स्तर गाँव की तुलना में उच्च होते हैं।

समुदाय की विशेषतायें

समुदाय की विशेषताएं क्या- क्या हैं, इसके बारे में अनेक विद्वानों ने अपने अलग- अलग विचार दिए हैं। एक और मैकावर ने समुदाय की विशेषताओं को दो भागों में बाँटा है- क) स्थानीय क्षेत्र और ख) सामुदायिकता की भावना। जबकि डैविस नामक विद्वान ने 'समान जीवन' को समुदाय की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता माना है। अब हम समुदाय की अनेक विशेषताओं को देखेंगे:

1. **व्यक्तिओं का बड़ा समूह:** समुदाय के निर्माण के लिये कम से कम इतने लोग जरूर होने चाहियें जिसमें वे एक-दूसरे की सहायता से अपनी सभी जरूरतों को पूरा कर सकें।
2. **सामुदायिकता की भावना:** इस समुदाय की सबसे बड़ी विशेषता है जिसे 'हम की भावना' भी कहते हैं। लेकिन, इसका तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि लोगों में इस बात का अहंकार होता है कि मैं ही केवल कोई काम कर सकता हूँ। इसके बिना किसी भी समुदाय के निर्माण की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। एक ही क्षेत्र में कई सालों तक एक-साथ रहने के कारण उनके बीच पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना का विकास हो जाता है। समुदाय की इसी विशेषता को गिडिंग्स ने 'समानता की चेतना' कहा है।
3. **निश्चित भू-भाग का होना:** एक समुदाय के लोग एक निश्चित क्षेत्र में रहकर ही अपनी अलग-अलग आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। हालाँकि अनेक जन-जातीय समूह अपना स्थान बदलते रहते हैं, लेकिन यह परिवर्तन भी एक निश्चित क्षेत्र में ही होता है। हाँ, इतना जरूर है कि जब कभी भी समुदाय के भू-भाग में विस्तार होता है, तो उनकी विशेषताओं में भी परिवर्तन होने लगता है।
4. **स्वतः विकास:** समुदाय का विकास स्वयं होता है। इसका निर्माण कभी भी योजना बनाकर नहीं किया जा सकता है। मतलब यह है कि जब कुछ लोग एक ही स्थान पर स्थाई रूप से रहने लगते हैं और जब हर संकट में वे एक दूसरे की मदद करने के लिये तैयार हो जाते हैं तो धीरे-धीरे उनके बीच में स्नेह और अपनेपन की भावना विकसित होने लगती है।
5. **सामान्य जीवन:** समुदाय में रहने वाले लोगों का जीवन काफी सामान्य होता है। समुदाय के लोगों की मनोवृत्तियाँ

विचार के साथ-साथ उनकी आर्थिक स्थिति और जीवन जीने के ढंग भी समान यानी एक जैसा हो जाता है। समुदाय के सामान्य जीवन के कारण ही इसे आत्म-निर्भर इकाई के रूप में देखा जाता है।

6. **सामान्य नियम:** यह समुदाय की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। जैसा कि पहले ही हम जानते हैं कि समुदाय में बहुत सारे लोग एक साथ रहते हैं। अतः उनका जीवन एक समान होने के बावजूद कभी-कभी उनमें अराजकता भी फैल जाती है और इसे नियंत्रित करने के लिये एक सामान्य नियमों का होना काफी आवश्यक है। इन नियमों में बँधे होने के कारण भी समुदाय के लोगों में समानता की चेतना का विकास होता है।

7. **अंतर्समुदाय:** समुदाय के अंदर ही अनेक समुदाय होते हैं। उदाहरण के लिये आज के आधुनिक समाज में लोग जीविकोपार्जन करने हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं जहाँ पर पहले से ही एक दूसरे समुदाय के लोग रह रहे होते हैं, उनके बीच दूसरे समुदाय के लोग जब रहने लगते हैं तो वहाँ समुदाय के अंदर ही दूसरा समुदाय बन जाता है। इसी तरह यदि किसी देश में युद्ध चल रहा होता है और वहाँ के लोग शरणार्थी बनकर किसी दूसरे देश में शरण लेते हैं तो भी अंतर्समुदाय का निर्माण होता है। अब कुछ भ्रामक समूह भी हमारे बीच पाया जाता है कि क्या वैसे समूह भी समुदाय हैं या नहीं। जैसे क्या हमारा पड़ोस समुदाय का उदाहरण है? तो इसका उत्तर है कि प्राचीन समय में पड़ोस में भी एक ही तरह के और एक ही स्थान के लोग रहते थे जिनसे उनके बीच वे सभी विशेषतायें पाई जाती थी जो कि ऊपर चर्चा किये गए हैं। किंतु आज के परिप्रेक्ष्य में यह नहीं कहा जा सकता है क्योंकि आज तो एक पड़ोसी अपने पास रह रहे दूसरे पड़ोसी को जानता तक नहीं। उनके पड़ोस में कौन रह रहा है या कौन है, उन्हें इन सब से कोई मतलब ही नहीं होता है। पड़ोस के सभी लोगों के व्यक्तियों का जीवन भी एक-दूसरे से काफी अलग होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी समूह में 'व्यक्तियों का बड़ा समूह', 'निश्चित भू-भाग', 'सामुदायिकता की भावना' और 'सामान्य जीवन' आदि चार विशेषताएं पाई जाती हैं तो ही वह समूह समुदाय कहलाता है। □

प्रागज्योतिषपुरः

उत्तर पूर्व का एक पौराणिक साम्राज्य



श्री धीराज कुमार दास
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

प्रागज्योतिष एक पौराणिक राज्य है जिसका उल्लेख अनेक हिंदू महाकाव्यों में मिलता है। वर्मन वंश के भास्करवर्मन ने पौराणिक प्रागज्योतिष के नरक/भगदत्त से अपनी वंशावली प्राप्त करके अपने परिधीय साम्राज्य को मुख्य भूमि की परंपराओं के करीब लाने के लिए ऐतिहासिक कामरूप से संबद्ध किया, उस समय जब वह उत्तर भारत में रुचि रखने वाले एक शक्तिशाली राजा के रूप में उभर रहे थे। पौराणिक नरक/भगदत्त वंश के साथ पहचान का उपयोग म्लेच्छों और पालों द्वारा लगभग समान उद्देश्यों के लिए किया जाता रहा।

प्रागज्योतिष नाम के संबंध में कई सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, जिनमें से पहला सिद्धांत चाओ-थियस जैसे लोगों को दर्शाता है जो बहुत प्रारंभिक काल में भारत में प्रवास कर गए थे और तीन महत्वपूर्ण केंद्रों पर बस गए थे, अर्थात् पूर्व में असम, मध्य भारत के बरेली जिले में और उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान में।

भारत में उन्हें जुहथिस और तीन केंद्रों को क्रमशः प्राग-जुहथिस, मध्य-जुहथिस और उत्तर-जुहथिस के नाम से जाना जाता था। जुहथिस शब्द बाद में संस्कृत शब्द ज्योतिष में बदल गया। लेकिन इस सिद्धांत का पर्याप्त प्रमाण नहीं है।

दूसरे सिद्धांत ने इस शब्द को भूमि की स्थलाकृतिक विशेषताओं से जोड़ने का प्रयास किया और इसकी उत्पत्ति ऑस्ट्रिक फ़ारसी शब्द पगार-जुह्तिश से मानी, जिसका अर्थ है विस्तृत पहाड़ियों का क्षेत्र।

कालिका पुराण में वर्णित तीसरा सिद्धांत यह है कि ब्रह्मा ने प्रागज्योतिष पर तारों की पहली गणना की थी। इस संबंध में एडवर्ड गेट ने बताया कि प्राग का अर्थ है पूर्व या पूर्वी और ज्योतिष का अर्थ है एक तारा, जो ज्योतिष को चमकाता है। इसलिए प्रागज्योतिषपुर का अर्थ 'पूर्वी ज्योतिष का शहर' हो सकता है।

सभी प्रारंभिक संदर्भ प्रागज्योतिष को पूर्वोत्तर भारत के कामरूप में या उसके आसपास नहीं दर्शाते हैं। इस राज्य का पहला उल्लेख रामायण और महाभारत में मिलता है, जो पहली शताब्दी से बहुत पहले नहीं लिखे गए थे। पूर्व के किष्किंधा कांड में, प्रागज्योतिष को समुद्र पर वराह पर्वत के पास पश्चिम में रखा गया है। उत्तरार्द्ध के अश्वमेध-पर्व में, अर्जुन ने निचली सिंधु घाटी में पंजाब के पास तीन दिवसीय युद्ध में प्रागज्योतिष के वज्रदत्त को हराया; हरिवंश पर्व में भी कई उल्लेख हैं।

प्रागज्योतिषपुर गुवाहाटी और उसके आसपास कहीं है। इस पर नरक का शासन था। उनके नाम पर शहर के मध्य स्थित पहाड़ी को नरकासुर पर्वत के नाम से जाना जाता है। इस पर्वत में एक मंदिर है जिसे तैंतीस करोड़ देवताओं का मंदिर कहा जाता है। यहाँ राजा नरकासुर ने भोर में पूजा की थी।

एक लोकप्रिय मिथक उन्हें जोड़ता है: नरकासुर, कामाख्या पर मोहित था, और कामाख्या ने उससे विवाह करने के लिए भोर तक अपने मंदिर तक एक सीढ़ी बनाने को कहा। वह लगभग सफल हो ही गया था, लेकिन कामाख्या द्वारा गलत समय पर मुर्गे की बांग देने की चाल से उसे विश्वास हो गया कि भोर हो गई है, इसलिए उसने सीढ़ी छोड़ दी। परिणामस्वरूप,

भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध कर दिया और यह घटना नरक चतुर्दशी के रूप में जानी जाने लगी।

नरक के जन्म का वर्णन विभिन्न ग्रंथों में मिलता है। कालिका पुराण और अन्य ग्रंथों में, वराह का उल्लेख नरक के दत्तक पिता के रूप में किया गया है। पवित्र नरक, शोणितपुर के बाणासुर नामक असुर के साथ संबंध के कारण दृष्ट बन गया, और इसलिए उसके नाम में 'असुर' प्रत्यय जोड़ दिया गया।

शक्ति के नशे में चूर, क्योंकि वह स्वयं को पराक्रम में अद्वितीय मानता था, उसने पृथ्वी के सभी राज्यों को अपने अधीन कर लिया। इसके बाद, उसने स्वर्गलोक की ओर दृष्टि घुमाई। यहाँ तक कि महाबली इंद्र भी विष्णु के इस पालक पुत्र के प्रहार का सामना नहीं कर सके और उन्हें स्वर्ग छोड़कर भागना पड़ा। नरकासुर स्वर्ग और पृथ्वी, दोनों का अधिपति बन गया था। शक्ति के नशे में चूर, उसने स्वर्ग की देवी अदिति के कुंडल चुरा लिए, उनके कुछ प्रदेशों पर कब्जा कर लिया, साथ ही 16000 स्त्रियों का अपहरण भी कर लिया। इंद्र के नेतृत्व में सभी देवता, नरकासुर से मुक्ति पाने के लिए विष्णु के पास गए। विष्णु ने उन्हें वचन दिया कि जब वे कृष्ण के रूप में अवतार लेंगे, तो वे इस मामले का ध्यान रखेंगे।

पृथ्वी देवी को दिए गए वचन के अनुसार, नरक को लंबे समय तक राज्य करने की अनुमति दी गई। अंत में, विष्णु ने कृष्ण के रूप में जन्म लिया। अदिति, जो कृष्ण की पत्नी सत्यभामा (भूदेवी - नरकासुर की धाय माँ का अवतार मानी जाती हैं) की रिश्तेदार थीं, मदद के लिए सत्यभामा के पास गईं। जब सत्यभामा ने नरकासुर द्वारा महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार और अदिति के साथ उसके व्यवहार के बारे में सुना, तो वह क्रोधित हो गई। सत्यभामा ने नरकासुर के खिलाफ युद्ध छेड़ने की अनुमति के लिए कृष्ण से संपर्क किया। देवताओं और अदिति को दिए गए वचन के अनुसार, कृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा के साथ गरुड़ पर्वत पर सवार होकर नरकासुर के विशाल किले पर हमला किया। कृष्ण ने नरकासुर की सेना के खिलाफ नारायणास्त्र और आग्नेयास्त्र का इस्तेमाल किया। युद्ध बहुत ही भयंकर लड़ा गया। नरकासुर के पास 11

अक्षौहिणी अंत में, जब नरकासुर ने कृष्ण को त्रिशूल से मारने की कोशिश की, तो कृष्ण ने मूर्छित होने का नाटक किया, क्योंकि उन्हें वरदान प्राप्त था कि नरकासुर का वध केवल उसे जन्म देने वाली ही कर सकती है। क्रोधित होकर, सत्यभामा ने नरकासुर पर आक्रमण किया और कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से नरकासुर को दो भागों में विभाजित करके उसका वध कर दिया।

भगदत्त प्राचीन भारतीय महाकाव्य महाभारत का एक पात्र है। वह प्रागज्योतिष के राजा नरक का पुत्र था। भगदत्त का जन्म बश्कल नामक असुर के एक अंग से हुआ था। वह एक प्रसिद्ध योद्धा था, और इंद्र का बहुत अच्छा मित्र माना जाता था। जब अर्जुन अपने भाई युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करने में मदद करने के लिए विजय अभियान पर निकले, तो भगदत्त उनके द्वारा जीते जाने वाले पहले राजाओं में से एक थे।

वह युद्ध में हाथियों के उपयोग में विशेष रूप से कुशल थे। अपने हाथी सुप्रतीक पर सवार होकर, वह कुरुक्षेत्र युद्ध में कौरवों की ओर से लड़े। अर्जुन ने उन्हें मार डाला।

कई इतिहासकारों के अनुसार, वर्तमान कामरूप को प्रागज्योतिषपुर के नाम से जाना जाता है, जबकि कुछ इसे कामरूप की राजधानी भी कहते हैं। 7वीं और 8वीं शताब्दी में कामरूप भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्वी भाग में स्थित था और इसमें संपूर्ण ब्रह्मपुत्र घाटी और असम, बंगाल, बिहार और भूटान के क्षेत्र शामिल थे।

यहाँ कामदेव ने असम में अपना जीवन और अपना मूल 'स्वरूप' पुनः प्राप्त किया और जिस भूमि पर यह घटित हुआ, वह "कामरूप" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

कामरूप अब असम का एक जिला है। इस बड़े जिले को कई जिलों में विभाजित किया गया है - कामरूप (महानगर), कामरूप (ग्रामीण), नलबाड़ी, बरपेटा, बास्का और बजाली। □

कैसे वे दिन बीत गए ...



सुश्री प्रीति राजभर
कनिष्ठ अनुवादक

कुछ अल्फाज बिन शब्दों के अधूरे रह गए
तू वहाँ मैं यहाँ वे दिन भी बीत गए ॥

बिखरे ख्वाबों को समेटने में कई जख्म हरे हो गए
उन जख्मों पर मरहम लगाने में कई मास बीत गए ॥

आँसुओं की सिसकियों में ही अंधेरे से उजाले हो गए
मिला करते थे जब हम वे लम्हें बीत गए ॥

बारिश की बूंदों की तरह तेरी यादें भी बिखर गए
तुझे इन बूंदों में महसूस किए बिन सावन भी बीत गए ॥

आँखों में तेरी यादों की तस्वीरें धूमिल हो गए
चंचल हवाओं में तेरी खुशबू कहीं बह गए ॥

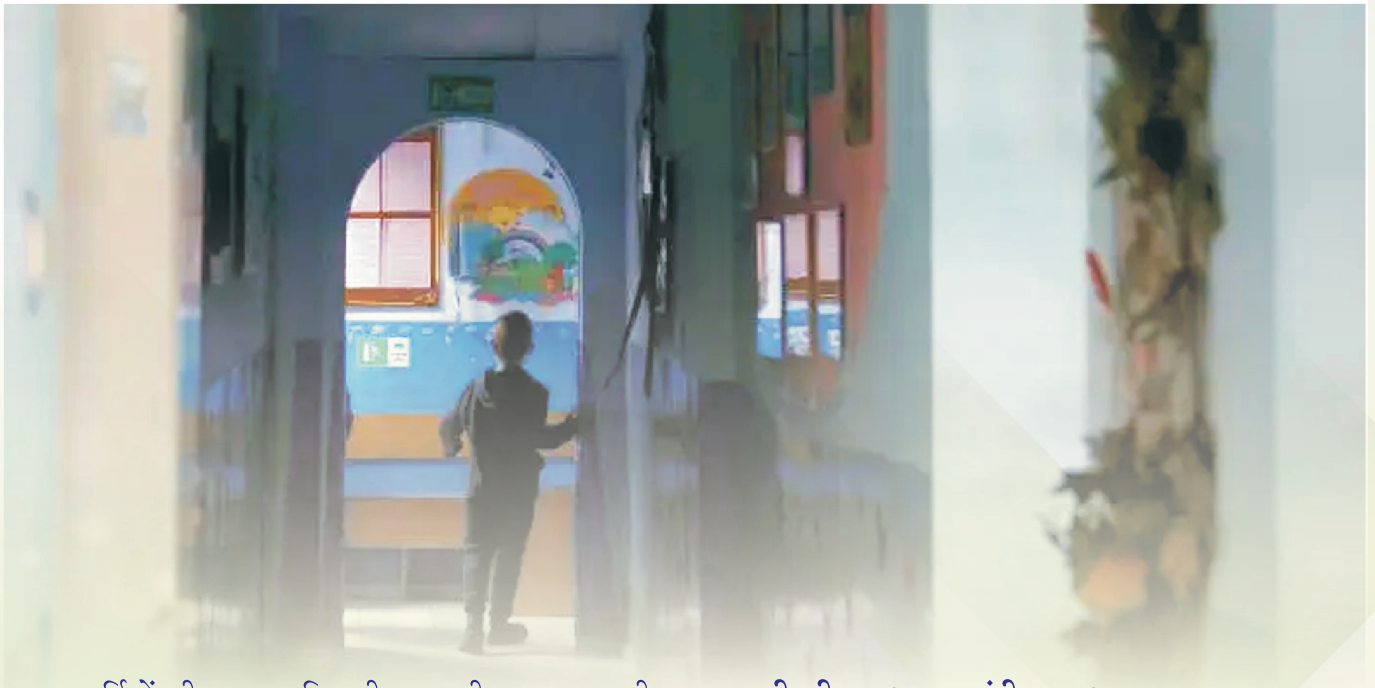
आसमान के ख्वाबों के तारें न जाने कैसे रूठ गए
अब न लौटेंगे वे पल जो कही अँधेरो में छूट गए ॥

कहा था न छोड़ेंगे साथ कभी फिर भी वादे टूट गए
धीरे-धीरे तेरी यादों में बिताए ये मास भी बीत गए ॥

अनाथालय की वो खामोश दीवारें



श्री संदीप
लेखाकार



सर्दियों की वह एक ठिठुरती सुबह थी, जब सूरज की किरणें भी हिम्मत जुटा रही थीं ज़मीन तक पहुँचने की। शहर के पुराने इलाके में एक सुनसान गली के आखिरी कोने पर था – ‘प्रेमाश्रय बाल आश्रम’। बाहर से देखने पर यह एक सामान्य इमारत लगती थी – हल्की खस्ता दीवारें, जंग लगे गेट, और आँगन में एक सूखा हुआ नीम का पेड़।

लेकिन इन दीवारों के भीतर... कुछ ऐसा था, जो शब्दों में नहीं कहा जा सकता। यह दीवारें न बोलती थीं, न चीखती थीं, लेकिन उनमें बसी थी हज़ारों अनकही कहानियाँ – छोड़े गए बच्चों की, झूठी ममता की, और उन सपनों की जो कभी आँखों में पलने भी न पाएँ।

कहानी की शुरुआत – संदीप का आगमन

आज एक नया चेहरा आने वाला था – संदीप, उम्र करीब 10 साल। पिता की मृत्यु सड़क दुर्घटना में हुई, और माँ... किसी को पता नहीं वो कहाँ चली गई। न रिश्तेदार, न जान-पहचान – जैसे उसकी पूरी पहचान बस एक कागज़ के पन्ने में सिमट कर रह गई थी। संदीप चुप था। बहुत चुप।

वो किसी से कुछ नहीं कहता, ना रोता, ना हँसता। आँखों में गहराई थी, जैसे सब कुछ देख ली हो। आश्रम की देखभाल करने वाली राजकौर मैम ने उसे गले से लगाकर कहा, ‘यहाँ सब तुम्हारे अपने हैं, बेटा। समय लगेगा... लेकिन सब ठीक होगा।’ पर संदीप के लिए ‘ठीक’ शब्द अब बेईमानी हो चुका था।

दीवारों की कहानियाँ

आश्रम के हर बच्चे की अपनी कहानी थी। सुमन, जो अपनी माँ के मरने के बाद यहाँ आई थी, अक्सर दीवारों से बातें करती। 'दीवार दीदी, मम्मी कब आएँगी?' दीवार कुछ नहीं कहती, लेकिन सुमन को लगता था कि वो सुन रही है।

दिनेश, 13 साल का लड़का, हर रात छत पर बैठकर तारों से अपने पिता को ढूँढता। 'वो यहीं हैं, ऊपर देखो, वो वाला तारा... वो पापा हैं।' और अब संदीप... दिन में दीवार के कोने में बैठा, बस अपनी किताबों को ताकता रहता। लेकिन ये खामोश दीवारें... सब देखती थीं।

संदीप और राजकौर मैम

राजकौर मैम, जो खुद कभी माँ नहीं बन पाई, ने इन बच्चों को ही अपना संसार बना लिया था। उनका मन सबसे ज्यादा संदीप की ओर खिंचता। शायद इसलिए कि उसकी आँखों में उन्होंने वही अकेलापन देखा था, जो कभी उन्होंने अपनी गोद में महसूस किया था।

एक दिन राजकौर मैम ने संदीप से पूछा, 'बेटा, क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो?' संदीप ने बस सिर हिला दिया। 'मुझे डर लगता है। कोई फिर छोड़ देगा।'।

ये शब्द राजकौर के दिल को चीर गए। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और कहा, 'मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूँगी। मैं तुम्हारी मम्मी तो नहीं बन सकती, लेकिन माँ जैसा प्यार देने की कोशिश जरूर करूँगी।'।

पहली बार... संदीप की आँखों में आँसू थे। खामोशी के भीतर छिपी एक चीख, जो अब बाहर आ रही थी।

अतीत की परछाईयाँ

एक शाम राजकौर अपने कमरे में बैठी एक पुरानी डायरी पढ़ रही थी। उसमें एक फोटो थी – एक नन्हा बच्चा, गोदी में लिए एक औरत। यह फोटो राजकौर की बहन की थी – निर्मला। एक समय वो भी माँ बनने वाली थी, लेकिन परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि उसने बच्चा अस्पताल में छोड़ दिया और फिर खुद गुम हो गई।

राजकौर के हाथ काँप रहे थे। उसने डायरी के पिछले पन्ने पर देखा – बच्चे का नाम लिखा था – संदीप। 'नहीं... ये... कैसे संभव है?' वो बुदबुदाई। दिल ने कहा – 'हाँ, वही संदीप है। मेरी बहन का बेटा... मेरा भांजा... मेरी साँसों का हिस्सा।'।

सच का सामना

राजकौर ने कई बार कोशिश की संदीप से बात करने की। धीरे-धीरे उनका रिश्ता मजबूत होने लगा। एक दिन उन्होंने संदीप से पूछा, 'क्या तुम्हें अपनी माँ की कोई बात याद है?' संदीप ने कहा, 'सिर्फ एक गाना... जो वो हर रात गुनगुनाती थी' – 'चंदा है तू, मेरा सूरज है तू...'।

राजकौर की आँखें भर आईं। यही लोरी उनकी बहन निर्मला भी गाती थी। अब राजकौर को यकीन हो चुका था – संदीप ही उसका भांजा है।

नया रिश्ता, नया नाम

एक दिन, राजकौर ने संदीप को गोद लेने का फैसला कर लिया। कागजी कार्यवाही मुश्किल थी, लेकिन उन्होंने हर संभव प्रयास किया। आश्रम में एक छोटी सी पूजा हुई – राजकौर ने संदीप को गोद में उठाकर कहा, 'आज से तू मेरा बेटा है, और मैं तेरी माँ... कुछ भी कह लो, अब ये रिश्ता कभी नहीं टूटेगा।'।

संदीप रोते हुए बोला,

'माँ...?'

राजकौर की आँखों से आँसू झरने लगे। पहली बार किसी ने उन्हें 'माँ' कहा था।

दीवारों की मुस्कान

अब वही खामोश दीवारें जैसे मुस्कुरा रही थीं। जहाँ कभी सिसकियाँ गुंजती थीं, अब वहाँ बच्चों की हँसी थी। सुमन को माँ जैसी राजकौर मैम में बहन मिल गई थी, दिनेश को बड़ा भाई जैसा संदीप। संदीप अब पढ़ाई में होशियार था, उसने ठान लिया था – 'एक दिन मैं बड़ा आदमी बनूँगा और ऐसा अनाथालय बनाऊँगा, जहाँ कोई बच्चा खुद को अकेला महसूस ना करे।'।

निर्मला की वापसी

एक दिन, आश्रम के बाहर एक औरत आई – बिखरे बाल, थकी आँखें और काँपती आवाज़।

‘क्या... क्या यहाँ एक लड़का है... नाम... संदीप...?’

राजकौर ने पहचान लिया – **निर्मला**!

निर्मला की हालत ठीक नहीं थी। सालों तक मानसिक अस्पताल में रही। अब ठीक होकर पहली बार आश्रम लौटी थी – अपने बेटे से मिलने।

जब संदीप को बुलाया गया, वो सामने खड़ी निर्मला को पहचान नहीं पाया।

‘ये मेरी... माँ?’ उसने राजकौर से पूछा।

राजकौर ने उसका सिर अपनी छाती से लगाकर कहा,

‘ये तुम्हें जन्म देने वाली माँ है... और मैं तुम्हें जीवन देने वाली।’

संदीप दौड़ कर निर्मला के गले लग गया।

‘माँ... आपने मुझे क्यों छोड़ा था?’

निर्मला फूट-फूट कर रो पड़ी – ‘मैं मजबूर थी बेटा... मैं तुझे कभी नहीं भूल पाई।’

अंतिम मोड़ – प्रेम और पुनर्जन्म

अब आश्रम के आँगन में एक नई तस्वीर टंगी थी –

तीन लोग – निर्मला, राजकौर और संदीप – एक परिवार की तरह।

खामोश दीवारों ने अब बोलना सीख लिया था – बच्चों की मुस्कान से, माँ की ममता से, और उन रिश्तों से जो जन्म से नहीं... प्रेम से बनते हैं।

संदीप की उड़ा

नई सुबह, नया रिश्ता

निर्मला अब पूरी तरह से ठीक हो रही थी। मानसिक अस्पताल के लंबे इलाज के बाद, उसकी याददाश्त लौटी तो सबसे पहले उसे सिर्फ एक नाम याद आया – ‘संदीप’। अब आश्रम में रहते हुए वो हर दिन कोशिश करती कि अपने बेटे से

रिश्ता फिर से बना सके। लेकिन संदीप के मन में द्वंद था – ‘क्यों छोड़ा गया था? क्या अब फिर से छोड़ दिया जाऊँगा?’

राजकौर मैम ने धीरे-धीरे माँ-बेटे के रिश्ते को पनपने का अवसर दिया। संदीप और निर्मला अब रोज़ बातें करते, साथ में खाना खाते, और कभी-कभी छत पर चाँद को निहारते।

निर्मला एक बार बोली – ‘मैं तुम्हारी माँ हूँ... लेकिन अब तुम मेरे सहारे हो। मुझे जीना है, ताकि तेरे बचपन की हर कमी को भर सकूँ।’

संदीप ने उसका हाथ थामा और कहा, ‘अब मुझे कोई माँ से नहीं छीन सकता।’

शिक्षा और सपना

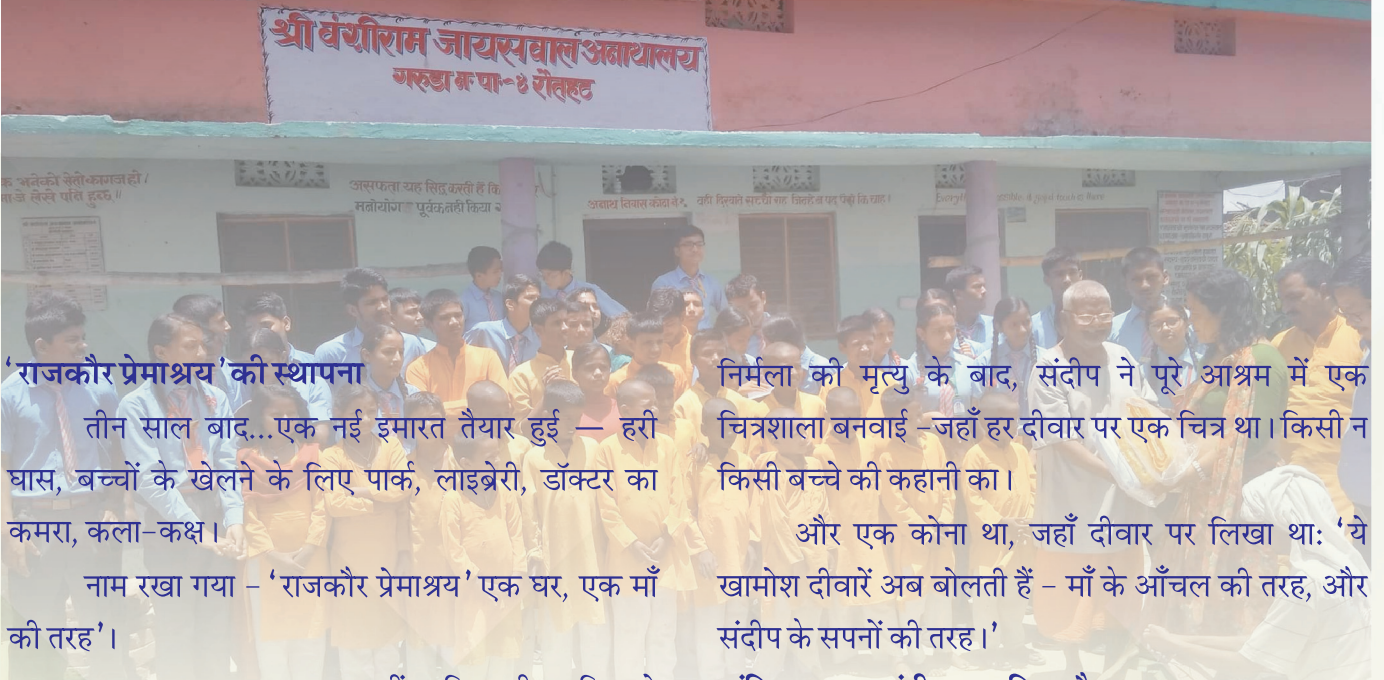
राजकौर मैम ने संदीप को अच्छे स्कूल में दाखिला दिलवाया। संदीप पढ़ाई में बहुत तेज़ था। उसके अंदर एक आग थी – कुछ बड़ा करने की, ताकि वो उन बच्चों के लिए कुछ कर सके जो आज भी तन्हाई में जी रहे हैं। कॉलेज में उसे स्कॉलरशिप मिली। वह सोशल वर्क और बाल अधिकारों पर पढ़ाई करने लगा।

हर छुट्टियों में वह आश्रम लौटता। बच्चों के साथ खेलता, पढ़ाता, कहानियाँ सुनाता – और एक दिन उसने अनाथ आश्रम के हर बच्चे से एक वादा किया – ‘जब मैं कमाऊँगा, सबसे पहले इसी जगह को फिर से बनवाऊँगा।’

माँ की मुस्कान और राजकौर की विदाई

संदीप की माँ निर्मला अब स्वस्थ और सशक्त थी। वो आश्रम की देखरेख में मदद करने लगी। वहीं राजकौर मैम अब वृद्ध हो रही थीं। उन्होंने एक दिन संदीप को बुलाकर कहा – ‘बेटा, अब ये आश्रम तुम्हारा है। मेरी आँखें अब धुंधली हो रही हैं, लेकिन तुझमें मैं अपना सपना साफ़ देख सकती हूँ।’

उस रात, राजकौर मैम नींद में ही शांत हो गईं। पूरा आश्रम रोया। लेकिन संदीप ने उनकी अंतिम इच्छा निभाई – ‘माँ अब मुझमें ज़िंदा रहेंगी। मैं हर अनाथ बच्चे में उन्हें देखूँगा।’



‘राजकौर प्रेमाश्रय’ की स्थापना

तीन साल बाद... एक नई इमारत तैयार हुई — हरी घास, बच्चों के खेलने के लिए पार्क, लाइब्रेरी, डॉक्टर का कमरा, कला-कक्ष।

नाम रखा गया – ‘राजकौर प्रेमाश्रय’ एक घर, एक माँ की तरह।

अब यह एक अनाथालय नहीं, बल्कि जीवन सिखाने वाला स्कूल बन चुका था। संदीप ने वहाँ एक बोर्ड लगवाया: ‘यहाँ कोई अनाथ नहीं होता। हर बच्चा यहाँ किसी माँ का सपना होता है।’

संदीप का सेवा जीवन

संदीप ने अपने जैसे बच्चों को खोज-खोज कर लाना शुरू किया – रेलवे स्टेशनों से, गलियों से, भीख माँगते छोटे हाथों से। हर बच्चे को पढ़ाया, उनकी कला को बढ़ाया। एक लड़की जिसका एक पैर नहीं है लेकिन उसे नृत्य का शौक है उसे नृत्य में प्रशिक्षण दिलवाया, जो बाद में राष्ट्रीय पुरस्कार जीत कर लौटी।

एक लड़का जो कभी बोल नहीं पाता था, आज आश्रम में साइन लैंग्वेज सिखा रहा था।

संदीप खुद एक सफल सामाजिक कार्यकर्ता बन चुका था। कई एन.जी.ओ. उसके साथ जुड़ चुके थे।

निर्मला की विदाई और संदीप की संकल्पना

एक दिन निर्मला की तबीयत अचानक बिगड़ गई। अस्पताल में उसने संदीप का हाथ थामकर कहा –

‘तू अब मेरा गर्व है... अब मुझे कोई अधूरापन नहीं लगता। राजकौर दीदी और तू... दोनों ने मुझे जीना सिखाया।’

निर्मला की मृत्यु के बाद, संदीप ने पूरे आश्रम में एक चित्रशाला बनवाई – जहाँ हर दीवार पर एक चित्र था। किसी न किसी बच्चे की कहानी का।

और एक कोना था, जहाँ दीवार पर लिखा था: ‘ये खामोश दीवारें अब बोलती हैं – माँ के आँचल की तरह, और संदीप के सपनों की तरह।’

अंतिम दृश्य – संदीप अब पिता जैसा

आज संदीप 35 साल का है। विवाहित नहीं, लेकिन आश्रम के हर बच्चे का ‘पापा’।

अनाथ आश्रम में एक दिन एक बच्ची आई — नाम थागौरी। रोती रहती थी, किसी से बात नहीं करती।

संदीप ने उसे गोद में लिया और वही लोरी गुनगुनाई –

‘चंदा है तू, मेरा सूरज है तू...’

गौरी ने धीरे से उसकी उँगली पकड़ी और मुस्कुरा दी।

अब संदीप जान चुका था – उसकी जिंदगी का अर्थ क्या है।

समाप्ति संदेश:

‘अनाथालय की वो खामोश दीवारें अब खामोश नहीं रहीं।

वो अब बोलती हैं — हर बच्चे की हँसी में, हर माँ की ममता में, और उस संदीप की आँखों में... जिसने दर्द से प्रेम तक की यात्रा की।

‘जो खुद टूटा था, वही अब दूसरों को जोड़ता है।’ □

जमाने में और भी गम हैं



सुश्री निकिता चक्रवर्ती
सुपुत्री- सुश्री मीनाक्षी चक्रवर्ती
आशुलिपिक- ग्रेड 1

फ़ैज़ साहब ने बार-बार बताया ।
हर रोज़ यह बात ज़ेहन में आती है,
जब गले में कांटे की तरह
कोई कड़वी बात - जो कभी
शहद में लिपटी चाशनी-सी लगती थी -
अचानक उमड़ पड़ती है ।

नानाजी ने कहा था:
'सरपट दौड़ते हुए अपने ख्यालों के घोड़ों की लगाम कसो, '
पर यह कभी सिखाया नहीं कि ऐसा करते कैसे हैं ।

हर रोज़ ये ख्याल
अपनी बेशर्मी से निकल पड़ते हैं
जैसे कह रहे हों
'आज कुछ भी हो जाए,
हम अब साहिल से लौटकर वापस नहीं आएंगे ।'

हर रोज़ एक अर्थी उठती है, हर रोज़ कुछ दफनाया जाता है ।
पर पाश की घास की तरह
ये मनहूस ख्याल फिर उग आते हैं ।
बरगद के पौधे की तरह मेरे इस दिमाग़ की दीवारें तोड़ जाते



कामकाजी महिलाओं की जीवन की चुनौतियाँ



सुश्री प्रीति राजभर
कनिष्ठ अनुवादक



वर्तमान परिदृश्य में भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में महिलायें धरती से आसमान तक अपनी जीत का परचम लहरा रही हैं। पिछले दशकों में महिलाओं का अस्तित्व केवल अपने परिवार तक ही सीमित था लेकिन आधुनिक महिलायें घर से बाहर निकलकर देश के विभिन्न क्षेत्रों जैसे व्यापार, राजनीति, चिकित्सा, अंतरिक्ष, खेल, जल-थल-वायु सेना एवं शिक्षा आदि में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही हैं। इसका उदाहरण हाल ही में हुए ऑपरेशन सिंदूर है जो न केवल सैन्य सामर्थ्य की दहाड़ था, बल्कि उसमें महिलाओं का योगदान, नेतृत्व और भावना तीनों का संगम था। समाज को उन सफल महिलाओं की कहानियों को आगे लाना चाहिए जो कठिनाइयों के बावजूद आगे बढ़ी। इससे अन्य महिलाओं को प्रेरणा मिलेगी।

‘तोड़ के बेड़ियाँ सदियों की
अब नारी ने रण संभाला है
अब नारी ने रण संभाला है
जीत लिया जमीं से नभ तक
इतिहास नया रच डाला है’

समाज में आज भी कामकाजी महिलाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने जॉब से पहले पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दें। उनकी तुलना गृहस्थ को संभालने वाली महिलाओं से की जाती है साथ ही उन्हें कई आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ता है। भारत जैसे विकासशील देश में शोधकर्ताओं के अनुसार महिला कार्य भागीदारी दर लगभग 20% है एवं वैश्विक औसत 47% से भी कम है। उन्होंने कामकाजी महिलाओं के मार्ग में आने वाली कई शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं के बारे में भी बताया है। इसके अलावा तनाव, अनियमित खानपान, नींद की कमी और समय का अभाव महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। मानसिक तनाव के साथ-साथ उन्हें पीसीओडी, थायरॉयड, ब्लड प्रेशर और डिप्रेशन जैसी समस्याएं भी अधिक प्रभावित करती हैं। घर से दूर रहने वाली महिलायें प्रायः बाहर का खाना खाती हैं जिससे उन्हें कई तरह की बीमारियों का भी सामना करना पड़ता है।

शिक्षा से नारी सशक्त होगी,
समानता से नारी आगे बढ़ेगी।
सम्मान से नारी ऊँचाइयाँ पाएगी,
स्वतंत्रता से नारी दुनिया सजायेगी।

स्त्रियाँ आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होने के लिए अपने शहर से दूर दूसरे शहरों में नौकरी करती हैं लेकिन मानसिक एवं भावनात्मक रूप से सदैव उन्हें अकेलेपन का एहसास होता है। परिवार से दूर अपनी भावनाएँ वे किसी से भी नहीं कहती और

उसी अकेलेपन में वे सालों बीता देती है। शोधकर्ताओं के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि नौकरी करने वाली शिक्षित स्त्रियों का दृष्टिकोण विवाह और परिवार के भीतर तथा बाहर के अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों की ओर बहुत कुछ बदल चुका है। स्त्रियों के बदलते हुए दृष्टिकोण के कारण पुरुषों के साथ उनके अंतरव्यक्ति संबंधों में कटुता आई है। कभी समाज के रीति-रिवाज के नाम पर तो कभी संस्कारों के नाम पर उनके अस्तित्व को दबाया जाता है। उक्त पंक्ति में किसी ने सच ही लिखा है-

‘अभिमान की आवाज में
कभी रीति कभी रिवाज में
भक्ति है जो उस नारी को
शक्ति जो उस चिंगारी को
जितना तुम उसे दबाओगे
एक ज्वाला को भड़काओगे’

आज भी कई रूढ़िवादी सोच रखने वाले लोग महिलाओं के काम करने को नकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। उन्हें घर की उपेक्षा करने वाली या अधिक स्वतंत्रता प्राप्त जैसी उपाधियाँ दी जाती हैं। कामकाजी महिलाओं को कार्यस्थल पर तथा आवागमन के दौरान यौन उत्पीड़न, अश्लील टिप्पणियों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। देर रात तक काम करने वाली महिलाओं के लिए यह चुनौती और भी गंभीर हो जाती है।

‘महिला की पहली प्राथमिकता परिवार’ जैसी कहावतें अभी भी समाज में व्याप्त हैं जिससे आज भी उन्हें सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता है। अधिकतर महिलायें कार्य के बाद घर पहुँचकर घरेलू कार्य में संलग्न हो जाती हैं जिससे उन्हें अपने लिए कभी समय नहीं मिल पाता।

घर से दूर रहने वाली महिलायें आत्मनिर्भर होती हैं एवं निर्णय लेने के लिए भी सशक्त होती हैं। वे अपनी कामकाज के साथ सारी जिम्मेदारियाँ भी निभाती हैं। वे न केवल स्वयं को बल्कि परिवार को भी आर्थिक रूप से सहयोग कर पाती हैं।

विभिन्न शहरों और परिस्थितियों का अनुभव उन्हें परिपक्व बनाता है इससे उनका व्यक्तित्व और अधिक मजबूत बनता है।

दर्पण हूँ और अक्स भी मैं
झुका सके ऐसा कोई शख्स नहीं।
स्वाभिमानि हूँ और आत्मनिर्भर भी मैं
टूट कर बिखरूँ अब वह वक्त नहीं ॥

सरकार ने कामकाजी महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए कई योजनाएँ और कानून भी बनाए हैं।

महिला सशक्तिकरण योजना: ‘महिला शक्ति केंद्र’, ‘स्टैण्ड अप इंडिया’, ‘बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ’ जैसी योजनाएँ आदि।

‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
उसके सपने को साकार बनाओ’

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न अधिनियम (2013): यह योजना महिलाओं को कार्यस्थल पर सुरक्षित माहौल देने के उद्देश्य से बनाया गया है।

मातृत्व लाभ अधिनियम इसके अंतर्गत महिलाओं को 26 सप्ताह का वेतन सहित अवकाश दिया जाता है।

समाज में लोगों की मानसिकता में बदलाव लाना अत्यंत आवश्यक है सबसे पहले यह जरूरी है कि महिलाओं को सिर्फ घरेलू जिम्मेदारियों तक ही सीमित न समझा जाए। कामकाजी महिलाओं की चुनौतियाँ केवल उनकी नहीं, बल्कि पूरे समाज की हैं। एक सशक्त महिला न केवल अपने परिवार को बेहतर बनाती है बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी अहम भूमिका अदा करती है। वर्तमान में आवश्यक यह है कि कामकाजी महिलाओं को एक ऐसा वातावरण दें जहां वे बिना किसी भय और भेदभाव के अपने सपनों को पूरा कर सकें। भारत जैसे विकासशील देश की सच्ची प्रगति तभी मानी जाएगी जब समाज की आधी आबादी, यानि महिलायें पूरी तरह सशक्त और आत्मनिर्भर बनेंगी। □



श्री अंकित
लेखाकार

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य, शिक्षा और समस्याएँ



दो शब्द कहकर, कुछ कर लो मन की बात, सत्य, अहिंसा, प्रेम को, कर लो तुम आत्मसात ।

रूप-रंग है अलग-अलग, सुर के स्वर हैं सात, एक धरा की हम अमानत, खंडों में न इनको बाँट ।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में यथार्थता और आदर्शों में भेद होने के कारण मूल्यों से समन्वय नहीं हो पा रहा है। शिक्षार्थी अपने अस्तित्व को न तो पहचान पाता है, न ही पुस्तकीय ज्ञान उसकी सहायता करता है। ये गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिये एक चुनौती है। मूल्य का क्या अर्थ है? - 'मूल्य अपने आप में ही मूल्यवान है क्योंकि जीवन-मूल्य का विचार हमें

जीवन दृष्टि की ओर ले जाता है जो व्यक्ति और समाज के लिये कल्याणकारी है। मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करें, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायता करे। केवल वही साध्य रूप से मूल्यवान है जो आत्म साक्षात्कार की ओर ले जाये।' इस प्रकार मूल्य वह सत्य है जिसके लिये व्यक्ति जीता है और आवश्यकता पड़ने पर संघर्ष करने, दुःख सहने तथा मृत्यु को भी स्वीकार करने के लिये तत्पर रहता है। कई महापुरुष जैसे सुकरात, ईसा मसीह एवं गाँधी जी के नाम दूसरे सन्दर्भ में श्रद्धा से लिये जाते हैं क्योंकि ये मूल्य के लिये ही जिये और मूल्य के लिए ही मृत्यु का वरण किया। मूल्य ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण है जिससे व्यक्तित्व का विकास होता है। इसमें मनुष्य की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति तथा आस्था आदि समाहित हैं ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अंतःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परम्परा द्वारा परिपोषित होते हैं। प्रकृति को समझने, संघर्ष करने और जीवन-संघर्ष में सफल होने और मानव बनने के प्रयास से मनुष्य ने अपने परिवेश के परिप्रेक्ष्य में आनन्द से जीने की एक दृष्टि विकसित की। इसी जीवन-दृष्टि को जिसे हम संस्कृति कहते हैं जिसके लिये कुछ नियम भी विकसित किये हैं, उन्हें जीवन मूल्य भी कहते हैं। जीवन मूल्यों को हम नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों में बाँट सकते हैं। यही मूल्य आत्म अनुशासन के रूप में मानव व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। मानव का मानव एवं समाज के प्रति, मानव का प्रकृति, जड़ एवं चेतन के प्रति, मानव का समस्त ब्रह्माण्ड



के प्रति व्यवहार इन्हीं मूल्यों के आधार पर होता है। ये जीवन-मूल्य देश में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में निरन्तर सम्प्रेषित होते रहते हैं। यही जीवन मूल्य संस्कृति कहलाते हैं। यही मूल्य व्यक्ति और राष्ट्र के चरित्र की पहचान होते हैं। मूल्य कई प्रकार के होते हैं जैसे-जैविक मूल्य, सामाजिक मूल्य और आध्यात्मिक मूल्य। मूल्यों में समय के साथ अन्तर आ रहा है। जैसे सतयुग, त्रेता और द्वापर की तुलना करें तो जो जीवन मूल्य सतयुग में थे वह त्रेता में नहीं थे, जो त्रेता में थे वे द्वापर में नहीं थे तथा जो द्वापर में थे वे कलयुग में पूर्णतः समाप्त हो चुके हैं। कलयुग अर्थात् हमारे जीवन में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के कारण दिन-प्रतिदिन घुटन बढ़ती ही जा रही है। सोशल मीडिया व तकनीक प्रभाव देखा जाये तो परिवार में छोटे-बड़ों का आदर नहीं रहा, पति-पत्नी के सम्बन्ध तनावपूर्ण है, सामाजिक मर्यादाओं, नियमों तथा व्यवस्थाओं का उल्लंघन करते हुए हम संकोच नहीं करते हैं। प्रदर्शन, हिंसात्मक विद्रोह एवं आतंकी घटनायें हमारे जीवन में हर समय तनाव या भय पैदा करते रहते हैं। भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, तस्करी, मिलावट, कालाधन आदि से सम्बन्धित गतिविधियाँ हमें दिन-प्रतिदिन व्याकुल करती रहती हैं। जीवन की शान्ति न जाने कहाँ भागे जा रही है? ये सभी बातें मूल्यों का ह्रास नहीं है तो और क्या है?

‘जीवन में पीछे देखोगे तो अनुभव मिलेगा, जीवन में आगे देखोगे तो आशा मिलेगी,

दायें बायें देखोगे तो सत्य मिलेगा, स्वयं के अन्दर देखोगे तो परमात्मा और आत्मविश्वास मिलेगा।’

वर्तमान परिप्रेक्ष्य की समस्याओं का अवलोकन कराने का उद्देश्य है कि इन मूल्यों का वर्तमान में संरक्षण करने से ही सम्पूर्ण है क्योंकि कोई भी मनुष्य जन्मजात खराब नहीं होता है। उसे वातावरण खराब बनाता है। मूल्यों की गिरावट के लिये काफी हद तक हमारा समाज व शिक्षा ही उत्तरदायी होता है। उसका हृदय पवित्र होता है। उसमें जाति-पाति का भेदभाव नहीं होता है। उसमें मानवीय मूल्य होते हैं। धीरे-धीरे जब वह बड़ा होता जाता है तो झूठ, स्वार्थ, लोभ, हिंसा, घृणा उसमें पनपने लगती है। शिक्षाविद, अधिकारी, राजनैतिक नेता, प्रेस आदि सममूल्यों में गिरावट की बात करते हैं। लेकिन मूल्यों का संरक्षण करने हेतु शिक्षा नीति में सुधार अपेक्षित है। वर्तमान में छात्र ही भावी समाज के निर्माता है। अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये जिससे उनमें मूल्यों का विकास हो तथा शाश्वत मूल्यों का संरक्षण हो सके।

बहुत जरूरी होती शिक्षा, सारे अवगुण धोती शिक्षा ।
चाहे जितना पढ़ ले हम, पर कभी न पूरी होती शिक्षा ॥
शिक्षा पाकर ही बनते हैं, नेता, अफसर और शिक्षक ।
वैज्ञानिक, मन्त्री और व्यापारी, और सेना में रक्षक ॥

बुद्धिहीन को बुद्धि देती, अज्ञानी को ज्ञान ।
शिक्षा से ही बन सकता है, भारत देश महान ॥ □

भक्ति की शक्ति



सुश्री दीपप्रिया कुमारी वर्णवाल
पत्नी- श्री दीपक कुमार वर्णवाल
सहायक लेखा अधिकारी

संत कबीर कहते हैं :

कबीरा कुत्ता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ।
गले राम की जेवड़ी, जित खेंचे तित जाऊँ।।

भक्ति की शक्ति इसी से समझी जा सकती है कि रावण और हिरण्यकश्यप से लेकर भक्त प्रह्लाद, गोस्वामी तुलसीदास, सुरदास, मीराबाई तथा और भी अनेक भक्त हुए जिन्होंने अपनी भक्ति से पूरे संसार में भक्ति की अलख जगाई। यह बात अलग है कि रावण और हिरण्यकश्यप जैसे लोगों ने अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिये भक्ति की और उनके भक्ति के पीछे का मुख्य उद्देश्य भक्ति से शक्ति प्राप्त कर साधारण जनमानस पर घोर अत्याचार करते थे।

वही दूसरी तरफ भक्त प्रह्लाद, मीराबाई, कबीर, तुलसीदास, सुरदास आदि जैसे भक्त हुए जिनकी भक्ति का मुख्य उद्देश्य मात्र भक्ति करना था और कुछ भी नहीं।

आजकल भक्तों की संख्या काफी बढ़ गयी है किंतु देखा जाये तो अधिकतर लोग कच्चे मन से भक्ति करते हैं जिनसे उन्हें ईश्वर का सानिध्य प्राप्त नहीं हो पाता है। सच्चे मन

से भक्ति करने वाले को ही ईश्वर का सानिध्य प्राप्त हो पाता है कबीर कहते हैं:

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
करका मनका डारी दे, मन का मनका फेर ॥

अर्थात्, ऐसे बहुत सारे भक्त हैं जो काफी लंबे समय से भगवान की भक्ति कर रहे हैं पर उन्हें भगवान के दर्शन नहीं हुए क्योंकि इस कलयुग में वे पूजा तो कर रहे हैं लेकिन उनका मन भगवान में पूर्णतः लीन नहीं है, उनका मन पूजा करते हुए भी सांसारिक मोह- माया के बारे में ही सोचता रहता है। अतः कबीर जी कहते हैं कि हाथों से जो माला हम फेर रहे हैं, उसे छोड़कर मन रूपी माला को फेरना चाहिये, तब जाकर कहीं भगवान के साथ हमारा अटूट संबंध स्थापित होगा।

भगवान की भक्ति की न कोई जाति होती है और न कोई धर्म। भगवान की भक्ति में जहाँ जाति-पाति की भावना आ गयी वहाँ भक्ति का कोई स्थान हो ही नहीं सकता है। भक्ति का मतलब है स्वयं को पूरी तरह से भगवान के हाथों में समर्पित कर देना और उन पर पूर्ण आस्था रखना। जो व्यक्ति ऐसा करने

में सक्षम हो जाते हैं, उनके अंदर से संसार के सारे बंधन यथा छल, कपट, विद्वेष, घृणा, मान-अपमान, ईर्ष्या आदि समाप्त हो जाते हैं और वह संसार की सभी वस्तुओं से प्रेम करने लगता है।

भगवान की अनन्य भक्त थी मीराबाई जिन्होंने अपनी भक्ति से संसार को भक्ति का सही अर्थ समझा दिया। जो व्यक्ति भगवान की भक्ति में पूर्णतः लीन हो जाता है उसे समाज की किसी और वस्तु का ध्यान नहीं रहता है और कभी-कभी तो वह विक्षिप्तता की अवस्था में चला जाता है। यही अवस्था भक्तन मीराबाई की थी। उनकी इस अवस्था से परेशान होकर उनके पति ने उन्हें विष भी पिलाया किंतु उन पर उस विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

सूरदास जैसे महाकवि ने भी भगवान की भक्ति का चमत्कार के बारे में लिखा है कि - 'जाकि कृपा पंगु गिरि लंघे आंधर को सब कुछ दरसाई'।

सूरदास जी अंधे थे, फिर भी उन्होंने श्री कृष्ण की छवि का जैसा चित्रण किया है लगता नहीं कि वे अपनी आँखों से देख नहीं सकते थे। यह सब कुछ और नहीं बस भक्ति का ही प्रताप था।

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जो कि विवाहोपरांत अपनी पत्नी की सौंदर्यता में इस तरह डूब चुके थे कि उन्हें अपनी पत्नी के अलावा और कुछ नहीं दिखता था। कहते हैं कि हर सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है। गोस्वामी तुलसीदास के महान श्री राम भक्त बनने के पीछे भी उनकी ही धर्मपत्नी रत्ना का हाथ था। उसी तरह जब रत्ना ने देखा कि उनके पति गोस्वामी तुलसीदास जब उनकी सौंदर्यता पर आसक्त होकर अकर्मण्य हो गये हैं तो उन्होंने उनसे कहा कि:-

लाज न आई आपको आएहु नाथ, आस्थ चर्म मय देह यह,

नेकु जो होती राम से, तो काहे भव-भीत।

रत्ना की इन पंक्तियों ने गोस्वामी तुलसीदास के जीवन

में ऐसा परिवर्तन लाया कि उन्होंने युगों-युगों तक जन-साधारण के हृदय में भक्ति की ज्योति जगाने वाली रचना 'श्री रामचरित मानस' की रचना कर डाली।

भक्त ही एक मात्र ऐसा होता है जो कि यदि मन से, हृदय से ईश्वर को याद करता है तो ईश्वर भी खुद को भक्त के हाथों में सुपुर्द कर देता है। इसलिए सच्ची भक्ति से भगवान भी भक्त के वश में हो जाते हैं क्योंकि सच्ची भक्ति ही वह माध्यम है जो भगवान को धरती पर अवतरित होने के लिये बाध्य कर देता है।

अब सभी भक्तों की भक्ति एक ही तरह की नहीं होती है। कुछ भक्त ईश्वर के प्रति वात्सल्य भाव रखते हैं और संतान के रूप में पाना चाहते हैं। जैसे कि माता यशोदा जिन्होंने भगवान को पुत्र रूप में पाया।

कुछ भक्त भगवान को मित्र मानकर उनकी भक्ति करते हैं और मोक्ष को प्राप्त करते हैं, जैसे भक्त सुदामा जिनके ऊपर भगवान ने तीनों लोकों को न्योछावर कर दिया था।

कुछ भक्त भगवान को अपना दास समझते हैं और उनकी भक्ति करते हैं। जैसे- महाकवि तुलसीदास और सूरदास आदि।

कुछ भक्त तो भगवान के साथ प्रेमी-प्रेमिका का संबंध रखकर भक्ति करती हैं जैसे राधा; जबकि मीराबाई ने भगवान को अपना पति ही मान लिया था।

कहने का तात्पर्य यह है कि हम भगवान को जैसे भी चाहे पूज सकते हैं पर सच्ची आस्था के साथ, तभी हमें भगवान का सानिध्य प्राप्त हो सकेगा।

किसी महापुरुष ने कहा है कि 'भक्ति में इतनी शक्ति है कि वो भगवान को पैदा कर देती है। हमें भक्ति के लिये भगवान की जरूरत नहीं, भक्ति है तो भगवान खुद पैदा हो जायेंगे।'।

भक्त का मतलब किसी का प्रशंसक होना या किसी का फैन होना नहीं होता है। भक्त की दुनिया तो ऐसी होती है कि जहाँ कुछ भी सही या गलत नहीं होता है, उसका कोई भी पसंद या नापसंद नहीं होता है। भक्ति एक पेड़ की जड़ की तरह होती



हैं जो किसी भी मौसम में नहीं सुखती, न मुरझाती हैं, बल्कि हमेशा वैसे ही बनी रहती हैं।

भक्ति का अर्थ मंदिर जा कर राम-राम कहना नहीं है। वो इंसान जो अपने एकमात्र लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित है, वह जो भी काम कर रहा है उसमें वह पूरी तरह से समर्पित है, वही सच्चा भक्त है। इस संदर्भ में एक कहानी चर्चित है:-

पुराने समय में राजाओं द्वारा गुरुकुलों और आश्रमों को संरक्षण दिया जाता था। इसी तरह एक बार एक राजा अपने राज्य के एक आश्रम को संरक्षण देता था और वहाँ के गुरु से कभी-कभी सलाह-मशविरा भी लिया करता था। यह सब देखकर राजदरबार के अन्य मंत्रीगण उस गुरु से ईर्ष्या करने लगे और राजा के कान भरने लगे। राजा से उन्होंने कहा कि आश्रम के लोग भक्ति भावना से काफी दूर हैं। वे सब राजकोष के पैसे का दुरुपयोग कर रहे हैं। यह सब सुनकर राजा भी असमंजस में पड़ गया। आश्रम के गुरुजी को बुलाकर कहा कि मैंने सुना है कि आपके आश्रम में उल्टे-सीधे काम हो रहे हैं। वहाँ अब अध्यात्म नहीं होता है बल्कि मेरे द्वारा दिये जाने वाले पैसे वहाँ के लोग सिर्फ खाते हैं और मस्त-मौला बनकर रहते हैं।

यह सुनकर गुरुजी को दुःख हुआ और उन्होंने राजा से कहा कि महाराज अगर आपको इस सत्य का पता लगाना है तो आज रात मेरे साथ रात्रि भ्रमण के लिये निकलिए। राजा ने वैसा ही किया और वेश बदलकर दोनों रात में निकल गये। सबसे पहले वे दोनों राजमंत्री के घर गये और सोते हुए मंत्री के ऊपर एक बाल्टी पानी डाल दिया। मंत्री गुस्से से उठकर अनाप-सनाप गालियाँ देने लगा। वे दोनों फिर वहाँ से भाग निकले। फिर वे दोनों सेनापति के घर गये और वहाँ भी सोते हुए सेनापति के ऊपर एक बाल्टी पानी डाल दिया। सेनापति भी उठकर और भी खराब-खराब गालियाँ देने लगा।

उसके बाद वे दोनों आश्रम पहुँचे और वहाँ भी सोते हुए एक व्यक्ति के ऊपर एक बाल्टी पानी डाल दिया। वह व्यक्ति झटके से उठा और शिव-शिव कहने लगा। फिर यही क्रम उन दोनों ने एक और व्यक्ति पर दोहराया। उस व्यक्ति ने ॐ शंभू-ॐ शंभू की रट लगाने लगा।

तब गुरुजी ने राजा से कहा कि महाराज आपने स्पष्ट अंतर देख लिया। आश्रम का हर व्यक्ति जागते या सोते किसी भी अवस्था में हो भगवान की भक्ति में ही लगे रहते हैं। भक्तों की यही प्रवृत्ति ही होती है।

जीवन में भक्ति के प्रवेश करने से जीवन में गहराई आ जाती है। भक्त को भक्ति के लिये किसी देवता या भगवान की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि भगवान से भक्ति नहीं बल्कि भक्ति से भगवान है। भक्ति में किसी भी आडंबर, अंधविश्वास का कोई स्थान ही नहीं होता। कबीर ने कहा भी है:-

जपमाला छापा तिलक, सरे न एकौ काम।

मन कांचे नाचै वृथा, साँचे रांचे रामु ॥

अतः भक्ति की शक्ति की महत्ता को एक सच्चा भक्त ही समझ सकता है और पूर्ण रूप से ईश्वर पर खुद को समर्पित कर मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है। □

पारंपरिक असमिया पोशाक और आभूषण



सुश्री पल्लवी दास
पत्नी-श्री धीराज कुमार दास
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

पारंपरिक पोशाकें

मेखला चादर असम की महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक पारंपरिक परिधान है। मेखला चादर दो टुकड़ों वाला परिधान है, जिसमें मेखला (एक बेलनाकार स्कर्ट) और चादर (एक वस्त्र) शामिल होता है, और यह आमतौर पर असम के रेशम जैसे मुगा, एरी या पाट रेशम से बनाया जाता है।



यह जटिल डिजाइनों, पैटर्नों और रूपांकनों से सुसज्जित होता है, जो अक्सर प्रकृति, असमिया संस्कृति या पौराणिक विषयों से प्रेरित होते हैं। ये डिजाइन मुख्यतः महिलाओं द्वारा हाथ से बुने जाते हैं। सामान्य रूपांकनों में पुष्प पैटर्न, ज्यामितीय आकृतियाँ और स्थानीय वन्यजीवों के चित्रण शामिल हैं, जो इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता का प्रतीक हैं।

कमर से नीचे तक लिपटा हुआ निचला भाग मेखला कहलाता है। यह कपड़े का एक चौड़ा बेलनाकार टुकड़ा होता है जिसे कमर के चारों ओर फिट करने के लिए एक या दो प्लीट्स में मोड़ा जाता है और अंदर डाला जाता है। प्लीट्स दाईं ओर मोड़ी जाती हैं और आमतौर पर कम संख्या में होती हैं, जबकि साड़ी की प्लीट्स आमतौर पर बाईं ओर मोड़ी जाती हैं और उनमें कई प्लीट्स होती हैं। मेखला को कमर के चारों ओर



बाँधने के लिए कभी भी डोरियों का इस्तेमाल नहीं किया जाता, हालाँकि डोरी वाली एक अंडरस्कर्ट अक्सर इस्तेमाल की जाती है।

दो टुकड़ों वाली पोशाक का ऊपरी हिस्सा, जिसे

चादर (उच्चारण:सदोर) कहा जाता है, कपड़े का एक लंबा टुकड़ा होता है जिसका एक सिरा नाभि के ऊपर मेखला के ऊपरी हिस्से में टक किया जाता है और बाकी छाती और पीठ के चारों ओर लपेटा जाता है। चादर के दूसरे छोर को कुछ प्लीट्स बनाने के बाद पेट में टक किया जाता है। मेखला चादर के साथ अक्सर एक फिट ब्लाउज पहना जाता है। परंपरागत रूप से, अतीत में, रिहा नामक एक अन्य परिधान को चादर के रूप में या चादर के नीचे एक आंतरिक टुकड़े के रूप में पहना जाता था। रिहा अभी भी असमिया दुल्हन के दहेज के हिस्से के रूप में पहना जाता है और कभी-कभी लोगों को बिहू और अन्य असमिया त्योहारों जैसे स्वदेशी पारंपरिक कार्यक्रमों में पहने हुए देखा जाता है। मेखला-चादरों पर सजावटी डिजाइन पारंपरिक रूप से बुने हुए होते हैं, कभी मुद्रित नहीं होते हैं। इन डिजाइनों में पशु-पक्षियों, मानव आकृतियों, फूलों, हीरों और खगोलीय घटनाओं के रूपांकन शामिल हैं। ये स्वदेशी डिजाइन आदिवासी और गैर-आदिवासी बुनकरों द्वारा बुने

जाते हैं। इन रूपांकनों को फूल कहा जाता है। चमकीले रंग के हीरे के रूपांकन, उत्कृष्ट कारीगरी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो असम के वस्त्रों की एक विशिष्ट और पारंपरिक विशेषता है। पाट और मुगा रेशम में फूलों और लताओं के नाजुक डिजाइन, जबकि ज्यामितीय आकृतियों के गहरे रूपांकन आमतौर पर एरी और कपास में पाए जाते हैं।

असम रेशम

मेखला चादर पारंपरिक रूप से विभिन्न प्रकार के स्वदेशी असम रेशमों से बनाई जाती है, जिनमें शामिल हैं:

- ♦ **गोल्डन मुगा रेशम:** एक अनोखा, स्वदेशी जंगली रेशम जो अपने प्राकृतिक सुनहरे रंग के लिए जाना जाता है।
- ♦ **पाट रेशम:** एक सफेद रेशम जो एक शानदार एहसास प्रदान करता है।
- ♦ **एरी रेशम:** एक गर्म, मुलायम रेशम जिसे अक्सर 'अहिंसा' रेशम कहा जाता है क्योंकि इसे रेशम के कीड़ों को नुकसान पहुँचाए बिना काटा जा सकता है।

पारंपरिक असमिया आभूषण

असमिया पारंपरिक आभूषण अपने परिवेश, प्रकृति और दैनिक जीवन में प्रयुक्त वस्तुओं से प्रेरणा लेते हैं और असम के उत्कृष्ट शिल्प हैं। मूल रूप से माणिक, चंद्रमणि, पन्ना और गार्नेट से जड़े, इन्हें बोलचाल की भाषा में 'दलिमिया पाथुर' कहा जाता था – (पत्थर के रंग की तुलना अनार के बीजों से की जाती थी)।

पारंपरिक असमिया आभूषण पूरी तरह से हाथ से बनाए जाते हैं और केवल विशेषज्ञ हाथों द्वारा ही बनाए जा सकते हैं। आभूषण मुख्यतः प्रकृति, संगीत वाद्ययंत्रों या दैनिक जीवन की अन्य वस्तुओं से प्रभावित होते हैं। असम के आभूषणों में पारंपरिक डिजाइन होते हैं, जिन्हें असम के जौहरियों द्वारा कुशलतापूर्वक डिजाइन किया जाता है, जो इसे विशिष्ट बनाता है और केवल असम में ही उपलब्ध है। असमिया आभूषणों

का मुख्य फ्रेम चाँदी से बना होता है और फिर इसे बहुत पतले सोने के आवरण से ढका जाता है। इस विशेष प्रकार के आभूषण बहुत किफायती और रखरखाव में आसान होते हैं। असम में आभूषणों के लिए सोना हमेशा से सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली धातु रही है, जबकि चाँदी और अन्य धातुओं का उपयोग भी सदियों से होता आ रहा है।

यह कला असम में तीन विशेष स्थानों में मुख्य रूप से प्रचलित है 1. नगांव 2. जोरहाट 3. बरपेटा। ऊपरी असम के आभूषण मुख्य रूप से पत्थर जड़े होते हैं जबकि निचले असम के लोग एक या बिना पत्थरों वाले जटिल सोने के डिजाइन वाले आभूषण पहनते थे।

असमिया आभूषणों का नाम उस डिजाइन के आधार पर रखा गया है, जैसे जोन बीरी (अर्धचंद्राकार/अर्धचंद्राकार पेंडेंट), लोकापारो (पीठ से पीठ सटाए दो कबूतर), जेठी पोटी (छिपकली की पूँछ और वी के आकार में छोटे पदकों की एक पंक्ति और एक केंद्रीय पेंडेंट), ढोल बीरी (ड्रम के आकार का) आदि।

असमिया आभूषणों के विभिन्न प्रकार

असमिया महिलाओं के पारंपरिक आभूषण विभिन्न श्रेणियों में उपलब्ध हैं, जिनकी शैली और रूपांकन अलग-अलग अर्थ रखते हैं। यहाँ कुछ सबसे लोकप्रिय आभूषणों के प्रकार दिए गए हैं:

1. जापी

जापी एक शंकु के आकार की टोपी होती है जो असमिया परिधान की एक विशिष्ट विशेषता है। इसलिए, इस प्रसिद्ध टोपी, जापी हार, में सुंदर डिजाइन होते हैं और कभी-कभी इसमें माणिक्य या लाल पत्थर की परत होती है।



2. गमखारू

गमखारू एक चौड़ी चूड़ी होती है जो आमतौर पर शुद्ध सोने या चाँदी से बनाई जाती है। इसकी डिज़ाइन में एक सहजता होती है और इसे महिलाएँ कढ़ाई करके पहनती हैं, खासकर शादियों और बिहू उत्सव जैसे अवसरों पर।



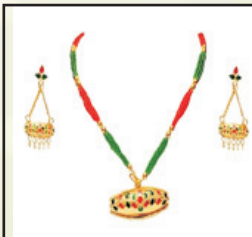
3. डूग डूगी

यह एक दिल के आकार का पेंडेंट होता है जिसे आमतौर पर नियमित रेशमी साड़ियों के साथ पहना जाता है। मुख्य रूप से, यह वजन में बहुत हल्का होता है और इसे आसानी से पहना जा सकता है; इसलिए, इसे असमिया महिलाएँ पसंद करती हैं।



4. केरु

केरु अर्धचंद्राकार असमिया पारंपरिक झुमके हैं। पारंपरिक रूप से पहने जाने के कारण, इन झुमकों को अक्सर हार के साथ पहना जाता है ताकि सेट पूरा हो सके।



5. लोकापारो

लोकापारो झुमके दो छोटे पक्षी-आकार के कटों से बनाए जाते हैं, जो प्रेम और सद्भाव का प्रतीक हैं। इन्हें आमतौर पर रत्नों से सजाया जाता है और ये स्थानीय स्तर पर पारंपरिक असमिया आभूषण के रूप में लोकप्रिय हैं।



6. थुरिया

थुरिया एक प्रमुख झुमका डिज़ाइन है जो गोल आकार का होता है। क्लासिक दिखने वाला और न्यूनतम डिज़ाइन, सोने से बना, यह लगभग हर उम्र की महिला के लिए उपयुक्त है।



7. बाना

जैक बाना हार बेल के पत्तों और फूलों से मिलते जुलते हैं क्योंकि इनके डिज़ाइन प्रकृति पर आधारित होते हैं। कारीगरों के कौशल को दर्शाने के लिए इन्हें हाथ से बनाया जाता है।

8. जोनबिरी और ढोलबिरी

जोनबिरी और ढोलबिरी असमिया महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले पारंपरिक आभूषण हैं, खासकर बिहू त्योहार के दौरान। जोनबिरी चंद्रमा के अर्धचंद्र जैसा दिखता है, जबकि दूसरा, ढोलबिरी, संगीत वाद्ययंत्र ढोल से काफी मिलता-जुलता है। यह देखना रोमांचक है कि ये आभूषण छोटे हैं, इन पर बारीक काम किया गया है, और रंग बहुत चटख हैं।



जोनबिरी



ढोलबिरी



पेपा



श्री विशाल कुमार सिंह
लेखाकार

प्रेम की तलाश: एक अंतर्गता

मैं प्रेम की तलाश में चला —
एक ऐसी अनुभूति की चाह में,
जो आत्मा को संपूर्ण कर दे,
जो जीवन को अर्थ दे, और
जिसमें अस्तित्व को खोकर
स्वयं को पाया जा सके।

मुझे उत्तर मिला — ‘नियति’।
प्रश्न उठा — क्या प्रेम पूर्वनिर्धारित होता है ?
क्या उसे खोजा नहीं, बस स्वीकारा जाता है ?

मैं नियति की खोज में निकला,
ताकि समझ सकूँ उस अदृश्य शक्ति को
जो हमारे कदमों की दिशा तय करती है।
उत्तर मिला — ‘यथार्थ’।
नियति कोई स्वप्न नहीं,
वह कठोर यथार्थ में ढली हुई सच्चाई है,
जहाँ स्वप्नों की चमक अक्सर धुंधला जाती है।

मैं यथार्थ के आलोक में सच्चाई को पकड़ने चला —
पर वहाँ मिला मुझे ‘विनाश’।
यथार्थ में बहुत कुछ टूटता है —
आकांक्षाएं, विश्वास, कभी-कभी आत्मा भी।
विनाश ने मुझे झकझोर कर पूछा —
‘तू स्वयं को जानता भी है क्या ?’

मैं विनाश के बाद बचे हुए टुकड़ों को समेटते हुए
आत्ममंथन की ओर मुड़ा —
और उत्तर मिला — ‘आत्मविश्लेषण’।
मैंने स्वयं के भीतर उतरना शुरू किया,
अंधेरों में टटोलने लगा अपनी ही छाया को।

इस आत्ममंथन की गहराइयों में
जब सभी शब्द बेईमानी लगने लगे,
तब उत्तर मिला — ‘मौन’।
शब्द थक चुके थे, विचार चुक चुके थे,
और मौन — एक गूँजता हुआ मौन —
मेरे भीतर उतरने लगा।

मौन ने मुझे संतुलन सिखाया,
और उसी मौन में मुझे मिला — ‘संतोष’।
एक ऐसा संतोष जो प्रश्न नहीं पूछता,
जो उत्तरों की परवाह नहीं करता,
जो केवल ‘होने’ को स्वीकारता है।

और जब मैंने संतोष को पाया,
तब मुझे यह भी ज्ञात हुआ —
अब किसी उत्तर की आवश्यकता नहीं।
अब खोज थम गई थी —
क्योंकि प्रश्न जल चुके थे
और मैं स्वयं उत्तर बन चुका था।

प्रताड़ना



श्री योगेश
डी.ई.ओ



कार्यस्थलों में महिलाओं के ऊपर होने वाली प्रताड़ना एक गंभीर मुद्दा है। यह समस्या न केवल महिलाओं के लिए मानसिक और भावनात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण होती है, बल्कि यह उनके कार्यस्थल पर सुरक्षा और सम्मान को भी प्रभावित करती है। कार्यस्थलों में महिलाओं के प्रति होने वाली प्रताड़ना के कई रूप हो सकते हैं, जिनमें यौन उत्पीड़न, मानसिक दबाव, भेदभाव, और असमान व्यवहार शामिल हैं।

कार्यस्थलों में महिलाओं के प्रति प्रताड़ना के कारण विविध हो सकते हैं। कुछ सामान्य कारणों में शामिल हैं:

शक्ति का दुरुपयोग:- कुछ अधिकारी या कर्मचारी अपने पद का उपयोग करके महिलाओं पर दबाव डाल सकते हैं।

लिंग आधारित भेदभाव:- कुछ मामलों में, महिलाओं को उनके लिंग के कारण कम आँका जा सकता है या उनके साथ भेदभाव किया जा सकता है।

कार्यस्थल की संस्कृति:- यदि कार्यस्थल पर महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा की संस्कृति नहीं है, तो प्रताड़ना की घटनाएं बढ़ सकती हैं।

कार्यस्थलों में महिलाओं के प्रति प्रताड़ना के प्रभाव गंभीर हो सकते हैं:-

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव:- प्रताड़ना के कारण महिलाओं को तनाव, चिंता, और अवसाद जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

कार्य प्रदर्शन पर प्रभाव:-प्रताड़ना के कारण महिलाओं का कार्य प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।

कार्यस्थल पर सुरक्षा और सम्मान:-प्रताड़ना से कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान को खतरा हो सकता है।

कार्यस्थलों में महिलाओं के प्रति प्रताड़ना एक गंभीर मुद्दा है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी उपाय किए जाने चाहिए। इससे न केवल महिलाओं के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक कार्य वातावरण बनेगा, बल्कि यह कार्यस्थल की समग्र उत्पादकता और स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाएगा।

कार्यस्थलों में महिलाओं के प्रति प्रताड़ना को रोकने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं

स्पष्ट नीतियां और प्रक्रियाएं:-कार्यस्थलों में महिलाओं के प्रति प्रताड़ना के खिलाफ स्पष्ट नीतियां और प्रक्रियाएं होनी चाहिए।

जागरूकता और प्रशिक्षण:-कर्मचारियों को प्रताड़ना के बारे में जागरूक करने और उन्हें इसके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

शिकायत निवारण तंत्र:-एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र होना चाहिए जिससे महिलाएं सुरक्षित रूप से अपनी शिकायतें दर्ज करा सकें।

कार्यस्थल की संस्कृति में सुधार:-कार्यस्थल पर एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए जहाँ महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा हो।

महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना बहुत जरूरी है। इसके लिए कार्यस्थल पर एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण बनाना आवश्यक है। महिलाओं को अपनी सुरक्षा के बारे में जागरूक रहना चाहिए और जरूरत पड़ने पर मदद लेनी चाहिए। कार्यस्थलों में महिलाओं के लिए सुरक्षा नीतियाँ और प्रक्रियाएं होनी चाहिए ताकि वे सुरक्षित महसूस कर सकें।

जैसे-

- स्पष्ट नीतियां और प्रक्रियाएँ बनाना जो महिलाओं के प्रति किसी भी प्रकार की प्रताड़ना या भेदभाव के खिलाफ हों।
- कर्मचारियों को महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण देना।
- एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करना जिससे महिलाएं सुरक्षित रूप से अपनी शिकायतें दर्ज करा सकें।
- कार्यस्थल पर एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना जहाँ महिलाओं के प्रति सम्मान और सुरक्षा हो। □

राज व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। - महात्मा गाँधी
हिन्दी अपने देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है। - माखनलाल चतुर्वेदी
हिन्दी, संस्कृत की सभी बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है। - ग्रियर्सन

रेत-सी जिंदगी



श्रीमती मीनाक्षी चक्रवर्ती
आशुलिपिक- ग्रेड-1

रेत की लंबी शीशी से
दो दाने रेत के ढूंढ रही हूँ
मैं खुद ही खुद में
खुद की परछाई ढूंढ रही हूँ।
खाली-सी मेरी खोपड़ी को
हर ताज से सजाती हूँ
इंस्टाग्राम पे पोंगा पंडित बन
एक ही चुटकी बजाकर
टैगोर बन जाती हूँ।
जेब में दो दाने रेत-सा
दौलत लिए हवा के झोंको-सा
हवाबाज़ी करती हूँ:
बेशब्द सारे दिमागों में
मैं ख्यालों की आफत बो आती हूँ।
पर कहानियाँ नहीं पढ़ी जाती मुझसे
विशेष टिप्पणी दिए बिन अब
उसमें क्रिटिकल लेंस का पापड़
और घमंड का अचार मिलकर
जिंदगी की खिचड़ी बना डालती हूँ।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की आवाज



श्री प्रखर सक्सेना
लेखकार



वॉइस कम्युनिकेशन एक साझा गतिविधि है जो दिमागों के बीच जानकारी के आदान-प्रदान का परिणाम होती है। यह केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं है, बल्कि इसमें शामिल व्यक्तियों के बीच विस्तृत जानकारी का स्थानांतरण होता है। जब वक्ता और श्रोता प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं, तो मस्तिष्क बोलने और समझने के दोहरे उद्देश्य को समन्वयित करता है।

औसतन, श्रोता के मस्तिष्क की गतिविधि कुछ विलंब के साथ प्रतिक्रिया करती है। जब पूर्वानुमानित प्रतिक्रियाएँ शामिल होती हैं, तो संवाद की प्रभावशीलता बढ़ जाती है। इसका उदाहरण मित्रों का पुनर्मिलन हो सकता है। भले ही वे लंबे समय बाद मिलें, वे एक-दूसरे की प्रतिक्रियाओं का अनुमान लगा सकते हैं और बहुत प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं।

ए आई वॉइस के फायदे :

नियंत्रण-

विभिन्न प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं को एक पूरी तरह से अनोखी आवाज प्रदान करने की अनुमति देते हैं, जो ब्रांड के लिए कस्टमाइज्ड होती है। ब्रांड उस आवाज का पूर्ण मालिक हो सकता है।

लागत-

वॉइस ओवर जैसे प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं के लिए यह सेवा बहुत कम लागत पर प्रदान करते हैं।

तत्काल उत्पादन-

जैसे ही कोई शब्द इनपुट करता है, डिवाइस कंटेंट का व्याख्यान एक क्लिक पर उपलब्ध हो सकता है।

ए आई वॉइस के नुकसान:

नैतिकता-

मानव जैसे सुनाई देने के लिए रोबोट का उपयोग करने के लिए नैतिक प्रश्न उठाता है। क्या ग्राहक को यह बताया जाना चाहिए कि सेवा प्रदान करने में रोबोट का उपयोग हो रहा है?

असल इंसान से दूर-

नवीनतम डिवाइस प्रगति प्रभावशाली हैं, लेकिन अभी भी उनमें रोबोटिक, गैर-मानव जैसी टोन और स्वर के स्तर को महसूस किया जा सकता है। यह ग्राहकों द्वारा पहचाना जा सकता है।

प्रामाणिकता-

जब कोई असली व्यक्ति (चाहे वह सेलिब्रिटी हो या प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्ति) ब्रांड की आवाज़ बनता है, तो उस व्यक्ति का जीवनशैली और मूल्यों का प्रभाव ब्रांड पर पड़ता है। जैसे कि विराट कोहली का उदाहरण, जिनकी आक्रामक और प्रभावशाली आवाज़ प्यूमा कंपनी के विज्ञापनों में झलकती है। इससे ग्राहक ब्रांड के साथ उन गुणों को जोड़ते हैं।

मानव वॉइस के फायदे:

असल-

एक मानव आवाज़ हमेशा मानव आवाज़ ही रहेगी। कोई भी प्रोग्रामिंग उस अनोखे व्यक्ति की तरह संवाद नहीं कर सकती, जिसके जीवन में विशिष्ट अनुभव और क्षण होते हैं।

हर व्यक्ति की यात्रा उसकी आवाज़ को आकार देती है, जो एक जीवनकाल लेती है, न कि प्रोग्रामिंग और सिमुलेशन के लिए आवश्यक संक्षिप्त समय।

कम कानूनी झंझट-

ए आई वॉइस कंपनियों को नियंत्रित करने के लिए बहुत कम कानून बने हैं कि कैसे रोबोट मानवों की तरह संवाद कर सकते हैं।

मानव वॉइस के नुकसान:

सीमित करियर और जीवनकाल-

अगर किसी ब्रांड का प्रतिनिधित्व एक विशेष मानव आवाज़ करता है, तो उस व्यक्ति का जीवनकाल सीमित है, और वे कभी भी अपना करियर बदल सकते हैं या रिटायर हो सकते हैं।

विभिन्न वेतन-

मनुष्य अपने काम के लिए अधिक भुगतान चाहते हैं। वॉयस एक्टर्स का वेतन उनके अनुभव, प्रसिद्धि और कौशल पर निर्भर करता है।

ब्रांड को कब सिंथेटिक वॉइस का उपयोग करना चाहिए?

क्या सिंथेटिक आवाज़ चुनना बेहतर है या अमेज़न और गूगल जैसे प्रदाताओं के डिफॉल्ट आवाज़ के साथ जाना चाहिए? और कब मानव वॉइस एक्टर्स का उपयोग करना चाहिए?

मानव बनाम सिंथेटिक निर्णय लेना

यह देखा जा सकता है कि लोग तब आरामदायक महसूस करते हैं जब सिंथेटिक या ऑटोमेटेड वॉइस कम से कम 1 मिनट से कम समय के लिए होती है। जैसे, हवाई अड्डे पर घोषणाएँ। ये संदेश अक्सर सिंथेटिक वॉइस से दिए जाते हैं। दूसरा आदर्श उपयोग ऐसा होता है जहाँ सवालों के त्वरित उत्तर मिलते हैं, जैसे 'आज मौसम कैसा है?'

भविष्य में संभावनाएँ-

भविष्य में ए आई वॉइस का उपयोग कई प्रकार से किया जा सकता है-

- ♦ ब्रांडेड पॉडकास्ट के ऐडवर्टाइज़मेंट में।
- ♦ एलेक्सा स्किल्स, गूगल एक्शन्स आदि-होम वॉइस-एसिस्टेंट डिवाइसों में फीचर्स को एक्सेस करने में।
- ♦ ब्लॉग/वेबसाइट की ऑडियो सामग्री (वीडियो मार्केटिंग रणनीति का विस्तार।
- ♦ नए ऑडियो माध्यमों में उपयोग के लिए ब्रांड के लिए साउंडमार्क बनाना।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

हिन्दी एक जानदार भाषा है; वह जितनी बढ़ेगी देश को उतना ही लाभ होगा। - पं. जवाहरलाल नेहरू

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण



स्वतंत्रता दिवस





श्री योगेंद्र कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

अयोध्या से जनकपुर का सफर

विश्वामित्र जब अयोध्या आए।
हाथ-जोड़ राजा सिर झुकाए ॥
भगवन आपके चरण महल को पधारे।
धन्य-धन्य होई आज भाग्य हमारे ॥
कैसे आगमन हुए प्रभु हमारे द्वारे।
शुभागमन का कृपा प्रयोजन बताये ॥
चारों दिशाओं में है आपके गुण-गान विदिशा।
रघुकुल द्वार से खाली हाथ कोई नहीं लौटा ॥
भगवन आज्ञा मोहि को दीन्हा।
सेवा करत मोय पीछे नहीं हटना ॥
सुंदर वन में रहती थी ताड़का राक्षसीनि।
त्राहि-त्राहि हो चुके हैं उससे जन-मुनि
सुबाहु-मारिच और अन्य यज्ञ को विध्वंश कराते।
कंकाल रक्त और निर यज्ञ कुंड में गिराते ॥
राजन, राम-लक्ष्मण मोय को दीन्हा।
राक्षस मारी कार्य होई पूर्णता ॥
हाथ-जोड़ राजन विनती करई।
राम-लखन कोमल बालक है साई ॥
राक्षस-दैत्य छल-कपट सब मोह-माया जानी।
कोमल बालक इनकी विधियाँ कैसे बुझ पायी ॥
मेरा सामर्थ्य है राक्षस कुल अंत हो जाई।
पर यह कार्य प्रभु राम शोहई ॥
बहस देख बीच वशिष्ठ मुनि आये।
पुत्र-मोह संग भय दूर कराये ॥
राम-लखन सभी विधाओं में है ज्ञानी।

काल भी स्वयं उन्हें मार न पाई ॥
राजमहल से निकल
महर्षि सरयू तट को आये।
दोनों राजकुमारों को संग लेकर
सिद्धाश्रम की ओर जाये ॥
नदी के दक्षिणी तीरे-तीरे
महर्षि चलते ही जाये।
अयोध्या नगरी आँखों से
जब तक ओझल न हो जाये ॥
राम-लखन एक बार (भी) पश्चात
अयोध्या नगरी नहीं देखें।
अब वे अपने माँ-बाप एवं गुरु
विश्वामित्र को ही समझे ॥
सूरज की किरणें अब धीमी होने को आई।
खग-बिहंग की झुड़ें अपने बसरे लौटने को आई ॥
राजकुमारों के हाव-भाव देख महर्षि मुस्कराये।
तनिक भी थकान तुम्हारे चेहरे पर न नजर आये ॥
आज रात्रि-विश्राम नदी तट पर ही लगाई।
सूखे पत्ते और कुश की बिस्तर लगाई ॥
राम-लखन नहाय-धोकर तट को आये
महर्षि बला अति बला नाम की विद्या सिखाये
यह विद्या तुम्हारे लिए है ऐसी दवाई।
नींद मे तुम्हें कोई मार न पाई।
अगले सुबह वे संगम तट आये
किशती उन्हें गंगा पार कराये ॥

गंगा पार या दुर्गम घना एक जंगल ।
 सूर्य की किरणें पहुँच न पाए धरती के आँचल ।।
 इसमें है कर्कश आवाज जानवरों का दंगल ।
 पर ये है जंगल का शुभ मंगल ही मंगल ।।
 विश्वामित्र राम-लखन को समझाएँ
 ताड़का इसी जंगल में समय बिताये
 जो भी जाये उन्हें मारकर खा जाएँ
 लोगों में डर-भय इतना समाये
 सुंदरवन अब ताड़का बन कहलाये ।।
 राम महर्षि से आज्ञा माँगे ।
 धनुष पर जब वह प्रत्यंचा चढ़ाये ।
 धनुष का टंकार सुनते ही ताड़का बिलबिलाई ।
 किसने मेरे नींद में खलल है डाली ।।
 ताड़का उठ खड़ा होकर बोली
 किसको मौत मेरे पास खींच लाई ।
 गरजती ताड़का राम की ओर आई
 राम-लखन पर उसने पत्थर बरसाई ।।
 उसके हर प्रहार वे वाण चलाये
 अंतिम वाण राम ने उसकी हृदय में लगाएँ
 तीर लगते ही ताड़का जमीन पर गिर आई
 धरती पर मानो भूकंप-सी आ गई
 आसमां में धूल का बादल छा-सी गई
 ताड़का फिर दुबारा उठ नहीं पाई ।।
 विश्वामित्र इसे देख फूले नहीं समाये
 दोनों भाईयों को वे गले से लगाए ।।
 देर शाम हो चुकी थी
 ताड़का अब मर चुकी थी
 तीनों ने रात उसी वन में बिताये
 अब वो पूरी तरह भय मुक्त हो चुकी थी
 अगले दिन एक नई सुबह हुई थी
 भयानक आवाजें गायब हो चुकी थी
 बहने वाली हवाओं में नई उमंगें आ चुकी थी
 जंगल की तस्वीरें पूरी तरह बदल चुकी थी
 विश्वामित्र संग राम-लक्ष्मण जब सिद्धाश्रम को आये

जन-मुनि-ज्ञानी उन्हें देख सभी के मन हर्षाये ।।
 ऋषि-मुनी सब यज्ञ की प्रबंध कराई
 विश्वामित्र यज्ञ अनुष्ठान आरंभ कराई
 राम-लखन विश्वामित्र को आश्वस्त कराएँ
 कोई विघ्न यज्ञ में राक्षस जाति न पहुँचाएँ
 समापन दिवस सुबाहु मारीच अपना दल-बल लेकर आये
 सुबाहु को राम स्वर्गलोक पढ़ाये
 मारीच को अचेतकर दक्षिणी द्वार पहुँचाएँ
 जैसे ही विश्वामित्र का अनुष्ठान जब सम्पन्न हुए
 उठकर महर्षि राम-लखन को गले लगाये
 तभी राम हाथ जोड़कर आज्ञा माँगे
 महर्षि कृपा आगे का आदेश बताएँ
 एक निमंत्रण विदेह राज से है आये
 एक अद्भूत आयोजन राजा जनक ने है लगाएँ
 स्वयंवर अपनी पुत्री सीता के लिए है रचायें
 बड़े-बड़े वीर योद्धा को पूरे संसार से बुलाये
 स्वयंवर की राजा जनक ने शर्त बताई
 जो शिव-धनुष तोड़ेंगे सीता उसकी हो जाएगी
 हमलोग मिथिला को जाएंगे
 अद्भूत दृश्य देखकर मन-विभोर हो जाएंगे
 महर्षि जब राजकुमारों के
 साथ मिथिला को निकले
 रास्ते में गौतम ऋषि के आश्रम
 होते हुए नगर में पहुँचे
 राजा जनक महल से बाहर
 आकर विश्वामित्र को स्वागत किए
 आपके चरण आगमन से
 पूरा मिथिला पावन और पवित्र हुए
 तभी विदेहराज की दृष्टि राजकुमारों पर पड़ी
 सुंदर और आकर्षक चेहरा
 देख उनकी आँखें फटे की फटे रही
 ये दो कमल नयन बालक कौन है महर्षि
 इनका परिचय और किनका पुत्र है स्वामी ।

कार्यालय का डिजिटलीकरण



श्री राहुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी



यह कहानी है एक सरकारी लेखा कार्यालय की, जहाँ वर्षों से सारा कार्य कागज, रजिस्टर और भारी फाइलों पर ही आधारित था। किसी भी प्रकार के छोटे से छोटे कार्य के लिए या कोई भी वेतन सम्बन्धी भुगतान हो, या उसकी जानकारी के लिए आवेदनकर्मी को बार-बार कार्यालय के चक्कर काटने पड़ते थे। कार्यालय कागजी आधारित होने के कारण कभी-कभी फाइलों का खो जाना, गलत रखरखाव और गलतफहमी के कारण कार्य पूर्ण होने में देरी एक सामान्य बात थी जिसके कारण ज्यादातर आवेदनकर्मी जो दूरदराज से जानकारी/वेतन भुगतान के लिए आते थे उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ता था तो कुछ इस से बचने के लिए जल्दबाजी में काम करवाने के चक्कर में रिश्वतखोरी के रूप में पैसे से भी अपना काम

निकलवाते थे जिससे की कार्य की पारदर्शिता में कमी और रिश्वतखोरी को बढ़ावा दे रहा था।

उपरोक्त अनियमितताओं को बार-बार सरकार और मुख्यालय कार्यालय के संज्ञान में समय - समय पर भी लाया जाता था और इसके निराकरण के लिए सरकार/मुख्यालय कार्यालय के द्वारा एक बड़ा कदम उठाया गया और 'डिजिटल लेखा' योजना शुरू की गई।

'डिजिटल लेखा' योजना के तहत कार्यालय का डिजिटलीकरण के प्रारम्भ में तो लेखा कार्यालय के पुराने कर्मचारियों में भय का माहौल व्याप्त हो गया था क्योंकि डिजिटलीकरण के लिए कंप्यूटर की जानकारी बहुत ही आवश्यक थी जिस से पुराने कर्मी अच्छे से अवगत नहीं थे और वे इसे बहुत बड़ी चुनौती के रूप में ले रहे थे और कहते 'कंप्यूटर हमारे बस की बात नहीं।' इंटरनेट की धीमी गति और बिजली की कटौती शुरुआत में परेशान करती थी। कार्यालय के कर्मी तकनीक से डरते थे, और इसके कारण उन्हें समझाना ज्यादा मुश्किल था। इन्हीं कर्मियों में एक वरिष्ठ अधिकारी श्री त्रिपाठी जो 30 वर्षों से कार्यालय में कार्यरत थे और बहुत ही होनहार और ईमानदार थे उनकी रुचि इस क्षेत्र में

ज्यादा थी उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने कार्यालय के नए युवाओं जो इंजीनियरिंग क्षेत्र से जुड़े थे और इंटरनेट/ कंप्यूटर से पहले से अवगत थे और इसमें कुशल थे उनकी मदद ली जिनसे कार्यालय के सभी कर्मियों को जो की कंप्यूटर से अनभिज्ञ थे उन्हें मदद मिल सके और सरकार द्वारा भी सभी कर्मचारियों को डिजिटलीकरण से जोड़ने के लिए इनसे सम्बंधित ट्रेनिंग जैसे PFMS, GEM, ई-पेमेंट पोर्टल और ई-बिलिंग जैसे आधुनिक टूल्स पर ऑफिस का कार्य करने का प्रशिक्षण भी दिया गया। कुछ ही समय में कार्यालय का नजारा बदल गया। धीरे-धीरे यह बदलाव कार्यालय कर्मियों को आसान लगने लगा भौतिक फाइल या कागज के बदले, सब कुछ कंप्यूटर में सुरक्षित होने लगा था। ऑफिस कर्मियों को डिजिटल हस्ताक्षर और ऑनलाइन आवेदन जैसी सुविधाओं का महत्व धीरे-धीरे समझ में आने लगा। अब कोई फाइल उठाकर लाने की जरूरत नहीं थी। सभी प्रकार के लेखा सम्बन्धी भुगतान के बिल ऑनलाइन भेजे जाने लगे थे, और लेखा कार्यालय उसी दिन भुगतान की प्रक्रिया शुरू कर देता। पहले भुगतान और दूसरे जानकारी के लिए महीनों दौड़ना पड़ता था, अब वो सभी काम ऑनलाइन ट्रैक होने लगा और पैसा सीधे खाते में आसानी से आना संभव हो गया। 'ऑडिटिंग

और रिकॉर्ड रखना आसान हो गया, पारदर्शिता बढ़ी, और फालतू देरी में भारी कमी आई। कार्यालय के सभी कर्मी/अधिकारी, जो पहले कंप्यूटर से डरते थे और इस से बचना चाहते थे, अब स्वयं GEM पोर्टल, PFMS, PENSION इत्यादि सम्बंधित कार्य पर खरीद आदेश जारी करते, डिजिटल हस्ताक्षर करते और नई पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगे।

वार्षिक निरीक्षण के रूप में जब मुख्यालय निरीक्षण टीम ने कार्यालय का दौरा किया, तो उन्होंने कार्यालय के डिजिटलीकरण को देख कर कहा,

‘यह कार्यालय डिजिटल लेखा प्रणाली का आदर्श उदाहरण बन चुका है।’

निष्कर्ष

तकनीकी परिवर्तन के साथ-साथ हमें मानसिक परिवर्तन की भी जरूरत है। जब सरकारी कार्यालयों में पारदर्शिता, जवाबदेही और कार्यक्षमता डिजिटल प्रणाली के जरिए आती है, तब ही डिजिटल भारत का सपना ज़मीनी हकीकत बनता है। □



‘वोकल फॉर लोकल’ अभियान और आत्मनिर्भर भारत



सुश्री काजल कुमारी
पत्नी- श्री रवि कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

‘स्वदेशी को अपनाएँ, आत्मनिर्भरता का दीप जलाएँ,
स्वदेशी संग बढ़ेगा मान, यही है भारत की पहचान।
लोकल को दें सशक्त सहारा, तभी सजेगा विकास का तारा,
वोकल बनें लोकल के लिए,
यही है प्रगति पथ की दिशा लिए।’

प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी आत्मनिर्भरता होती है। जो राष्ट्र अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम होता है, वही वास्तविक अर्थों में स्वतंत्र और शक्तिशाली कहा जा सकता है। भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे राष्ट्र के लिए आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक नीति का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय स्वाभिमान, आत्मसम्मान और विकास की आधारशिला है। वैश्वीकरण के युग में जब अधिकांश देश परस्पर निर्भरता की डोर से बंधे हुए हैं, तब भारत ने ‘वोकल फॉर लोकल’ और ‘आत्मनिर्भर भारत’ जैसे आह्वान के माध्यम से यह संदेश दिया है कि आत्मनिर्भरता का अर्थ आत्मकेंद्रित होना नहीं, बल्कि वैश्विक मंच पर मजबूत और आत्मविश्वास से भरी उपस्थिति दर्ज कराना है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिए आत्मनिर्भरता का विचार कोई नया नहीं है। महात्मा गाँधी से लेकर आधुनिक युग तक इस विचार की प्रासंगिकता बनी रही है। कोविड-19 वैश्विक महामारी ने विश्व को यह सिखाया कि केवल विदेशी आयात और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं पर निर्भर रहना कितना खतरनाक हो सकता है। इसी पृष्ठभूमि में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए ‘आत्मनिर्भर भारत अभियान’ और ‘वोकल फॉर लोकल’ का आह्वान किया। ‘वोकल फॉर लोकल’ का अर्थ केवल स्थानीय उत्पादों का उपयोग करना नहीं है, बल्कि उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना भी है। यह नारा हमें हमारे स्थानीय उद्योग, कुटीर शिल्प, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, और स्टार्टअप्स की ओर पुनः ध्यान केंद्रित करने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार ‘वोकल फॉर लोकल’ केवल उपभोक्ता स्तर पर बदलाव का आह्वान नहीं है, बल्कि एक व्यापक आर्थिक सुधार की पहल है। आज के परिप्रेक्ष्य में यह अभियान केवल आर्थिक सुधार का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया है।

आत्मनिर्भरता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत का इतिहास आत्मनिर्भरता और स्वदेशी विकास की गाथाओं से भरा पड़ा है। प्राचीन काल में भारत को ‘सोने की चिड़िया’ कहा जाता था क्योंकि यहाँ की कृषि, हस्तशिल्प, वस्त्र और व्यापार व्यवस्था पूरी तरह स्वावलंबी थी। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर गुप्त और मौर्य काल तक भारत ने स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर एक सशक्त आर्थिक ढाँचा खड़ा किया। उस काल में भारत विश्व व्यापार का केंद्र था। कृषि आधारित अर्थव्यवस्था ने समाज को खाद्य सुरक्षा प्रदान की। कपड़ा उद्योग, विशेषकर सूती वस्त्र और रेशम, विश्वभर में प्रसिद्ध थे। गाँव स्तर पर कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प फलते-फूलते थे। भारतीय मसाले, धातु और रत्न विदेशों तक निर्यात

किये जाते थे। इस प्रकार, भारत न केवल आत्मनिर्भर था, बल्कि विश्व व्यापार में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा था।

औपनिवेशिक काल और स्वदेशी आंदोलन-

जब ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन भारत आया तो उसने यहाँ की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कदम उठाए। स्थानीय उद्योगों को नष्ट कर विदेशी वस्तुओं का बाजार तैयार किया गया। खासकर कपड़ा उद्योग पर गहरा प्रहार किया गया। परिणामस्वरूप भारत एक उपभोक्ता देश बन गया और ब्रिटेन का औद्योगिक केंद्र और समृद्धि भारत के शोषण पर आधारित होने लगा। सन् 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में उठे स्वदेशी आंदोलन ने स्थानीय उत्पादों को अपनाने और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का संदेश दिया। गाँधीजी ने चरखा और खादी को आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनाकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।

- ♦ गाँधीजी का मानना था कि 'भारत की आत्मा गाँवों में बस्ती है' और यदि गाँव आत्मनिर्भर होंगे तो पूरा भारत सशक्त होगा।
- ♦ खादी और हस्तकरघा उद्योग केवल वस्त्र उत्पादन का साधन नहीं थे, बल्कि आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान का प्रतीक थे।

इस प्रकार औपनिवेशिक काल ने यह सिद्ध किया कि विदेशी निर्भरता केवल आर्थिक शोषण ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पिछड़ेपन का कारण भी बनती है।

बदलती वैश्विक परिस्थितियाँ और आत्मनिर्भरता की नई परिभाषा-

इक्कीसवीं सदी की शुरुआती दशक में जब वैश्वीकरण अपने चरम पर था, तब यह धारणा बनने लगी थी कि आत्मनिर्भरता अब पुराना विचार है और देशों को परस्पर निर्भर रहकर ही आगे बढ़ना होगा लेकिन कोविड-19 महामारी ने इस सोच को बदल दिया।

- ♦ जब अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ बंद हुईं, परिवहन ठप हुआ और आपूर्ति शृंखलाएँ टूट गईं, तब दुनिया को समझ आया

कि बिना आत्मनिर्भरता के अस्तित्व संकट में पड़ सकता है।

- ♦ भारत ने इस संकट में अपनी दवा उद्योग, कृषि उद्योग और स्थानीय उत्पादन क्षमता के बल पर न केवल अपने देशवासियों को सहयोग दिया, बल्कि कई देशों को दवाइयाँ और वैक्सीन भी उपलब्ध करवाई।

यही वह समय था जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'वोकल फॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' का आह्वान किया। इसका अर्थ यह नहीं था कि भारत दुनिया से अलग हो जाएगा, बल्कि यह है कि भारत अपने उत्पादों को मजबूत बनाकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनेगा।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और वोकल फॉर लोकल-

भारत की लगभग 65% आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। गाँव केवल कृषि उत्पादन का केंद्र ही नहीं है, बल्कि वे हस्तशिल्प, बुनाई, मिट्टी के बर्तन, बांस के उत्पाद, लोक कलाओं और खाद्य प्रसंस्करण के छोटे-छोटे केंद्र भी हैं। वोकल फॉर लोकल का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह ग्रामीण क्षेत्रों के इन छोटे उद्योगों को बाजार उपलब्ध करवाता है।
उदाहरणस्वरूप:-

- ♦ 'एक जिला, एक उत्पाद' योजना के माध्यम से प्रत्येक जिले के प्रमुख उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दी जा रही है।
- ♦ खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने कोविड काल में लाखों मास्क और अन्य वस्तुएँ बनाकर देशभर में आपूर्ति की।
- ♦ ट्रीफेड जैसी संस्थाओं ने जनजातीय उत्पादों को बाजार से जोड़ने का कार्य किया।

इस प्रकार वोकल फॉर लोकल अभियान ग्रामीण विकास, रोजगार और आर्थिक संतुलन को बढ़ावा देता है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र की भूमिका-

भारत की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। आंकड़ों के अनुसार यह



क्षेत्र भारत की जीडीपी में लगभग 30% योगदान करता है। कोविड काल में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग सबसे अधिक प्रभावित हुआ। लाखों छोटे उद्योग बंद हो गए और करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए। ऐसे समय में वोकल फॉर लोकल अभियान इन उद्योगों के लिए जीवनदायिनी साबित हुआ। जब उपभोक्ताओं ने स्थानीय स्तर पर बनी वस्तुओं को अपनाना शुरू किया, तो इस उद्योग क्षेत्र में पुनः गति आई। सरकार ने भी 'आपातकालीन ऋण गारंटी योजना' जैसी योजनाएँ शुरू कीं, ताकि छोटे उद्योग अपनी उत्पादन क्षमता फिर से बढ़ा सकें।

वोकल फॉर लोकल अभियान का उद्भव-

वर्ष 2020 में कोविड-19 महामारी ने दुनिया की अर्थव्यवस्था को हिला दिया। इस महामारी ने दिखाया कि अन्य देशों पर अत्यधिक निर्भरता कितनी खतरनाक हो सकती है। आयातित वस्तुओं की कमी ने स्थानीय उत्पादन को महत्व दिया। जब अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति शृंखलाओं टूट गई, दवाइयाँ और आवश्यक वस्तुओं की कमी हुई, तब भारत ने स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करने और अपने उद्योगों को सशक्त बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाया। इस संकट ने भारत को आत्मनिर्भरता की आवश्यकता का अहसास कराया।

औपनिवेशिक काल में भारत की आत्मनिर्भरता को गहरी चोट पहुँची। अंग्रेजों ने भारत को कच्चा माल आपूर्ति करने वाला और अपने उद्योगों के लिए बाजार बना दिया। विदेशी कपड़ों और वस्तुओं के प्रसार ने भारतीय कारीगरों और हस्तशिल्प को नष्ट कर दिया। इसी के प्रतिकार में स्वदेशी

आंदोलन का जन्म हुआ। महात्मा गाँधी ने 'चरखा और खादी' को आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनाया। उन्होंने कहा- 'स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्वावलंबन भी है।' स्वतंत्रता के बाद भारत ने योजनाबद्ध विकास का मार्ग अपनाया, परंतु विदेशी तकनीक और पूंजी पर निर्भरता बनी रही।

उपभोक्ता मानसिकता और अभियान का महत्व-

किसी भी अभियान की सफलता केवल नीतियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उपभोक्ताओं की मानसिकता पर भी निर्भर करती है। लंबे समय तक भारतीय उपभोक्ताओं के मन में यह धारणा रही कि विदेशी वस्तुएँ गुणवत्ता में बेहतर होती हैं लेकिन वोकल फॉर लोकल अभियान ने इस मानसिकता को बदलने का प्रयास किया।

- ♦ अब भारतीय उपभोक्ता स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देने लगे हैं।
- ♦ ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे अमेजन, फ्लिपकार्ट पर लोकल उत्पादों की बिक्री बढ़ी है।
- ♦ कोविड काल में जब 'मेड इन इंडिया' वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ी, तो लोगों ने महसूस किया कि हमारे उत्पाद भी किसी से कम नहीं।

इस अभियान का महत्व केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है, आत्मसम्मान बढ़ाता है और राष्ट्र को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करता है।

स्वदेशी की शक्ति से देश सजाएँ,
वोकल फॉर लोकल का स्वर अपनाएँ।
हर बाजार में गूँजे भारत की शान,
लोकल ही है असली पहचान।
जन-जन उठे आत्मनिर्भरता संग,
लोकल बने भारत की प्रगति का रंग। □

खेल आखिर क्यों?



सुश्री कुमारी सोनिया
बहन - श्री अंकित, लेखाकार

‘सुदृढ़ स्वास्थ्य ही वह नींव है जिसके ऊपर सुदृढ़ राष्ट्र खड़ा हो सकता है।’ क्योंकि उत्तम शरीर में उत्तम मस्तिष्क और उत्तम मस्तिष्क में उत्तम आत्मा का निवास होता है। इन्हीं आत्माओं के आधार पर किसी महान राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। शारीरिक उन्नति के बिना कोई भी उन्नति आगे नहीं बढ़ सकती है। लगभग 200 वर्ष पूर्व सिकन्दर महान के चिकित्सक हीरोफिलिस ने कहा था कि ‘स्वास्थ्य के अभाव में ज्ञान कारगर नहीं होता, कला को अभिव्यक्ति नहीं मिलती शक्ति लड़ नहीं सकती, धन बेकार हो जाता है और बुद्धिमानी किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाती है।’ इस कथन का अर्थ आज भी और भारतीयम का प्रारंभिक उद्देश्य शारीरिक व्यायाम और खेलों द्वारा अच्छा स्वास्थ्य बनाने की रुचि जागृत करना है। इस क्षेत्र में खेलों का बहुत बड़ा योगदान है। खेलना मनुष्य की मूल प्रवृत्ति तथा प्राकृतिक क्रिया है ईश्वर ने शायद मानव शरीर की संरचना इस क्रिया को ध्यान में रखकर ही की है। वरना क्या जरूरत थी 70 करोड़ वायुकोषों की व 30,000 से भी अधिक कैपिलरीस के जाल फैलाने की। क्या आवश्यकता थी हृदय को 200 बार प्रतिमिनट से भी अधिक बार धड़कने की क्षमता प्रदान करने की। खेल सामान्यतः समय व्यतीत व मनोरंजन करने का सुखद तरीका है, परंतु कुछ लोगों के लिए खेल दुस्साहस पूर्ण मनोरंजन भी है, विशेष रूप से ऐसे लोगों के लिए जो खतरों से खेलना पसंद करते हैं एवं चुनौतियों को स्वीकारने में जिन्हें आनंद मिलता है।

खेल कोई अलग से घटित होने वाली प्रक्रिया नहीं है जो सामान्य जीवन से जुड़ी न हो। इसके लिए सामाजिक मूल्यों की अलग से स्थापना करने की भी आवश्यकता नहीं है, मानव के क्रमिक विकास-क्रम तथा सामाजिक चेतना जागरण का यह एक हिस्सा है, कई मानवीय प्रवृत्तियाँ विभिन्न प्रकार के खेलों के

माध्यम से मुखरित होती है जैसे-

1. मनोगत्यात्मकता का त्वरित समायोजन, 2. एकजुट होकर कार्य करने की क्षमता, 3. धैर्य व संघर्षरत रहने की क्षमता का विकास, 4. कौशल अभ्यास, 5. देश-प्रेम की भावना का विकास, 6. भाई-चारे की भावना का विकास आदि।

‘खेल के मैदान में आपको खोने को कुछ नहीं है, जो कुछ भी है पाना ही पाना है।’ खेल-कूद के महत्व व अनिवार्यता को आप अस्वीकार नहीं कर सकते, बच्चा पैदा होते ही पालने में खेलता है और आप उससे खेलते हैं, इस आधार पर दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में खेल से जुड़ा है। कौन नहीं जानता कि खेलों के महाकुंभ ‘ओलंपिक’ पदक तालिका में सम्मान जनक स्थान प्राप्त करने से देश को गौरव प्राप्त होता है। इस युग में अश्वमेघ का घोड़ा नहीं छोड़ा जाता तथा लड़ाईयाँ भी कम लड़ी जाती हैं, बस चार साल बाद ओलम्पिक की लड़ाई होती है इसमें जो खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करता है उससे पूरे देश का गौरव बढ़ जाता है। रोम ओलम्पिक सन् 1960 के उद्घाटन के समय ईसाई धर्मगुरु पोप जॉन पाल ने कहा था- ‘खिलाड़ियों आप धन्य हैं, आप लड़ाई के मैदान को खेल के मैदान में बदल देते हैं यानि घृणा के बदले प्यार बाँटते हैं।’

अतः खेल व क्रियाएं मानव के जीवन में आवश्यक भूमिका निभाते हैं। खेल में शामिल व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व सांस्कृतिक स्वास्थ्यता की अधिकता होती है। इसलिए खिलाड़ी को ‘शांति का राजदूत’ माना जाता है। विदेशी भूमि पर भारतीय ध्वज लहराने का गौरव खिलाड़ी को ही प्राप्त होता है। आईये हम सभी खेल को अपने जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में शामिल करें।

सक्रिय रहें, फिट रहें, अपने जीवन का आनंद लें, निष्क्रिय रहें, मोटा हो जाएं, जोखिम उठाएं..... चुनाव आपका है।

कला, साहित्य और विज्ञान: भारत की त्रिसूत्रीय आत्मा



सुश्री सुरभि कुमारी सिंह
बहन-श्री विशाल सिंह
लेखाकार

भारत एक प्राचीन सभ्यता है जिसकी आत्मा विविध आयामों से संचित है। यद्यपि यह देश राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अनेक रूपांतरणों से गुजरा है, किंतु उसकी संस्कृति का मूल आधार सदा से उसकी त्रिसूत्रीय आत्मा रही है — कला, साहित्य और विज्ञान। ये तीनों आयाम न केवल भारतीय सभ्यता की पहचान हैं, बल्कि वे उस आध्यात्मिक और बौद्धिक ऊर्जा के स्रोत हैं, जिसने भारत को युगों-युगों तक विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया। भारत की यह त्रिसूत्रीय आत्मा समय, सत्ता और संघर्षों से परे, एक निरंतर प्रवाहमान चेतना के रूप में आज भी जीवित है और भविष्य की दिशा तय करने में सक्षम है।

भारतीय कला का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होता है जहाँ की मूर्तियाँ, शील, नक्काशी और स्थापत्य हमें उस युग के सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक संवेदनशीलता की झलक देते हैं। मोहनजोदड़ों की नर्तकी की कांस्य प्रतिमा हो या हड़प्पा की पशुपति मुद्रा में ध्यानस्थ योगी, यह सब प्राचीन भारत की कलात्मक परंपरा के जीवंत प्रतीक हैं। इसके बाद वैदिक युग में यज्ञ वेदियों की संरचना, छंदों की माधुर्यता और सामवेद की संगीतात्मकता से यह स्पष्ट होता है कि भारतीयों ने कला को केवल सौंदर्य की दृष्टि से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नयन के साधन के रूप में भी देखा। मौर्य, गुप्त, मौर्योत्तर, चोल और विजयनगर जैसे शासकों ने कला को संरक्षण दिया, जिससे अजंता-एलोरा की गुफाएँ, कोणार्क और खजुराहो के मंदिर, नटराज की प्रतिमाएँ और नयनाभिराम चित्रकला की परंपराएँ विकसित हुईं। भारतीय कला सदा से शारीरिक सौंदर्य से अधिक आत्मिक सौंदर्य की खोज रही है, जिसमें हर रेखा, रंग और

आकार किसी दार्शनिक या धार्मिक अवधारणा को मूर्त रूप देता है।

कला की ही तरह साहित्य भी भारत की आत्मा का प्रमुख आधार रहा है। ऋग्वेद की ऋचाओं से लेकर आज की समकालीन कहानियों तक, भारतीय साहित्य ने मानव जीवन के हर पक्ष को छुआ है। भारत में साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति, समाज का प्रतिबिंब और विचारधारा का वाहक रहा है। संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि की रामायण और व्यास की महाभारत जैसे महाकाव्य न केवल कथानक की दृष्टि से अद्भुत हैं, बल्कि वे धर्म, नीति, कर्तव्य और सामाजिक संरचना की गहन व्याख्या करते हैं। कालिदास, भवभूति, भास और बाणभट्ट जैसे कवियों और नाटककारों ने साहित्य को काव्यात्मक और दार्शनिक ऊँचाइयाँ दीं। आगे चलकर हिंदी, तमिल, बंगाली, उर्दू, मराठी, गुजराती, मलयालम, तेलुगु जैसी अनेक भाषाओं में जो साहित्य रचा गया, वह न केवल भारतीय भाषाई विविधता का प्रमाण है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि भारतीय आत्मा ने कितने विभिन्न रूपों में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। तुलसीदास का रामचरितमानस लोक और लीलाओं का समागम है तो कबीर की साखियाँ समाज में व्याप्त पाखंडों को तोड़ने वाली तीव्र आत्मचेतना का स्वर। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, निर्मल वर्मा जैसे रचनाकारों ने आधुनिक भारत के साहित्य को सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आयामों से समृद्ध किया।

जहाँ कला और साहित्य आत्मा के सौंदर्य और भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं, वहीं विज्ञान भारतीय आत्मा का तार्किक और

अनुभवसिद्ध पक्ष है। विज्ञान को भारत में कभी धर्म से अलग नहीं माना गया, बल्कि वैदिक काल से ही जिज्ञासा और पर्यवेक्षण को ज्ञान की सर्वोच्च विधा माना गया। वेदों में खगोलशास्त्र, गणित, औषधि विज्ञान और धातु विज्ञान के सूत्र मिलते हैं। आयुर्वेद के जनक चरक और सुश्रुत जैसे ऋषियों ने चिकित्सा विज्ञान को केवल शरीर की नहीं, मन और आत्मा की आरोग्यता के रूप में देखा। ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट, वराहमिहिर और भास्कराचार्य जैसे गणितज्ञों ने दशमलव पद्धति, शून्य की अवधारणा और खगोलशास्त्रीय गणनाओं द्वारा विज्ञान को विश्व को दिया। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों में विज्ञान का अध्ययन उच्चतम स्तर पर होता था, जहाँ भारत और एशिया के विभिन्न भागों से छात्र ज्ञानार्जन के लिए आते थे। विज्ञान के प्रति यह प्रवृत्ति केवल पुरातन नहीं, आधुनिक काल में भी जीवित रही है। वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस, सी.वी. रमण, होमी भाभा, मेघनाद साहा, और एपीजे अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों ने भारतीय वैज्ञानिक चेतना को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई। भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम, विशेषकर चंद्रयान और गगनयान मिशन, केवल तकनीकी उपलब्धियाँ नहीं हैं, वे भारत की आत्मा में निहित उस वैज्ञानिक दृष्टि के परिणाम हैं जो ब्रह्मांड को केवल पूजा का नहीं, अन्वेषण का विषय भी मानती है।

इन तीनों सूत्रों — कला, साहित्य और विज्ञान — में एक गहरा आपसी संबंध भी है। भारतीय चित्रकला में विज्ञान के अनुपात, संतुलन और रेखाओं का सम्यक प्रयोग दिखाई देता है। वहीं विज्ञान के ग्रंथों में सौंदर्यबोध और काव्यात्मकता का समावेश मिलता है। चरक संहिता या भास्कराचार्य की लीलावती केवल वैज्ञानिक ग्रंथ नहीं, वे साहित्यिक कृति भी हैं। इसी प्रकार भारतीय मंदिरों की स्थापत्य कला में खगोलीय गणनाओं का सूक्ष्म प्रयोग, वास्तुशास्त्र के सिद्धांत, और ध्वनि की गूंज के वैज्ञानिक प्रयोग इस बात का प्रमाण हैं कि भारत ने कला, विज्ञान और आध्यात्मिकता को कभी पृथक् नहीं माना। यह समन्वय ही उसकी आत्मा की विशिष्टता है।

आज के समय में जब विश्व एक ओर तकनीकी विकास की दौड़ में है और दूसरी ओर सांस्कृतिक और भावनात्मक शून्यता से ग्रसित है, भारत की त्रिसूत्रीय आत्मा एक संतुलित विकल्प प्रस्तुत करती है। यह आत्मा सिखाती है कि मनुष्य को न केवल विज्ञान की सहायता से जीवन को सुविधाजनक बनाना

चाहिए, बल्कि कला से उसे सुंदर और साहित्य से उसे सार्थक भी बनाना चाहिए। यह त्रिसूत्रीय दृष्टिकोण न केवल समाज को संतुलन देता है, बल्कि वह मनुष्य को एक समग्र व्यक्तित्व की ओर उन्मुख करता है। जब एक समाज केवल तकनीक पर केंद्रित होता है, तो वह मानवीय संवेदनाओं से कट जाता है; और जब वह केवल भावनाओं में बहता है, तो वह वैज्ञानिक उन्नति से वंचित रह जाता है। भारत की परंपरा ने इस द्वैत को नहीं स्वीकारा, बल्कि इन दोनों को एकत्रित करके उसे जीवन के सौंदर्य और सत्य की खोज का माध्यम बनाया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत अपनी इस त्रिसूत्रीय आत्मा को पुनः जागरूक करे। कला को केवल दीर्घाओं तक, साहित्य को केवल पाठ्यक्रमों तक और विज्ञान को केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित न रखा जाए। इन्हें समाज के हर स्तर पर पहुँचाने की आवश्यकता है। विद्यालयों में शिक्षा इस प्रकार दी जाए कि बच्चों में तार्किकता के साथ-साथ कल्पनाशीलता और संवेदना भी विकसित हो। युवाओं को तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी मंच दिया जाए। साहित्यिक विमर्श को केवल बौद्धिक वर्ग की सीमाओं से निकालकर सामान्य जन तक पहुँचाया जाए। विज्ञान को धर्मविरोधी न मानकर, उसे आत्मज्ञान की एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाए, जैसे हमारे ऋषियों ने किया था।

भारत की आत्मा की यह त्रिसूत्रीय धारा केवल अतीत की विरासत नहीं, भविष्य की संभावना भी है। जब भारत इन तीनों सूत्रों को एक साथ लेकर चलेगा, तभी वह अपनी खोई हुई सांस्कृतिक अस्मिता को पुनः प्राप्त कर सकेगा और एक बार फिर विश्वगुरु की भूमिका में लौट सकेगा। भारत का यह स्वरूप न केवल आत्मनिर्भर होगा, बल्कि आत्मविकसित भी। जहाँ कला में सौंदर्य होगा, साहित्य में विचार और विज्ञान में विवेक। यही वह भारत होगा जिसकी आत्मा सदियों से गूंजती आई है — जहाँ नृत्य में ध्यान है, कविता में दर्शन है और विज्ञान में साधना। यही भारत की आत्मा है — त्रिसूत्रीय, संतुलित और चिरंतन। ■

मेघालय दूर: विस्तृत विवरण



श्री राजू अधिकारी
सहायक लेखा अधिकारी

मेघालय भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक सुंदर और प्राकृतिक रूप से समृद्ध राज्य है। इसका नाम संस्कृत शब्द 'मेघ' (बादल) और 'आलय' (घर) से बना है, जिसका अर्थ होता है 'बादलों का घर'। यह राज्य 21 जनवरी, 1972 को असम से अलग होकर बना था, और इसकी राजधानी शिलांग है। मेघालय की भौगोलिक संरचना मुख्य रूप से पहाड़ी है, जिसमें गहरी घाटियां, पठार और प्राकृतिक जलप्रपात शामिल हैं। यहाँ की आबादी मुख्य रूप से खासी, गारो और जैंतिया जैसी जनजातियों की है, जो अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और पारंपरिक जीवनशैली के लिए प्रसिद्ध हैं।

मेघालय में मातृसत्तात्मक समाज प्रचलित है, जहाँ परिवार की वंशावली और संपत्ति महिलाओं के नाम पर होती है। यह राज्य भारी वर्षा के लिए जाना जाता है और भारत का एक सबसे आर्द्र क्षेत्र है। यहाँ वनों की बहुतायत है, जो जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण हैं। मेघालय की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, लेकिन पर्यटन यहाँ की प्रमुख आय का स्रोत भी है, क्योंकि इसकी प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक रंगीनता बहुत आकर्षक हैं। यह राज्य अपने अनोखे वातावरण और शांतिपूर्ण जीवन के लिए जाना जाता है।

मेघालय के प्रमुख जिले एवं उनके आकर्षण:-

1. **शिलांग:** उमियाम झील, एलिफेंट फॉल्स, डॉन बॉस्को संग्रहालय, पोलो ग्राउंड, वार्डस लेक, शिलांग पीक।
2. **चेरापूंजी:** नोहकलिकाई फॉल्स, सेवन सिस्टर्स फॉल्स, मावसमाई गुफा, लिविंग रूट ब्रिज, इको पार्क।
3. **पूर्वी खासी:** लैटलम कैन्यन, मावफलांग पवित्र वन, सांस्कृतिक गांव।

4. **पश्चिम जयंतिया:** डावकी नदी (एशिया की सबसे साफ नदी), जोवाई, सिंद्रा फॉल्स, थडान युंग गुफा।

5. **दक्षिण गारो हिल्स:** बालपक्रम नेशनल पार्क, सिजू गुफा, विलियमनगर, सिमसंग नदी।

6. **री-भोई:** नोंगपोह, री कानन रिजॉर्ट, सर्पेंटाइन रोड, हरे-भरे परिदृश्य।

7. **मौसिनराम:** सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान, बादलों की घाटी, प्राकृतिक खूबसूरती।

नीचे मेघालय दूर प्लान के प्रत्येक महत्वपूर्ण स्थल का विस्तार से विवरण, उसकी दूरी, पहुँच मार्ग और खासियत दी गई है—

1. शिलांग

- ♦ गुवाहाटी रेलवे स्टेशन या एयरपोर्ट से शिलांग की दूरी लगभग 100-105 कि.मी है। यहाँ से टैक्सी या शेयरिंग कैब से 2-2.5 घंटे में पहुँच सकते हैं।
- ♦ शिलांग में वार्डस लेक, पोलो ग्राउंड, शिलांग पीक (सबसे ऊँचा पॉइंट, पूरे शहर का नजारा), डॉन बॉस्को संग्रहालय और शाही बाजार देखें।
- ♦ उमियाम झील (शिलांग से 16 कि.मी उत्तर में) पर बोटिंग करें, यह रास्ते में ही है और उत्तम पिकनिक स्थल है।
- ♦ शिलांग में लोकल संस्कृति देखने के लिए लेडी हैदरी पार्क, मिनी चिड़ियाघर और लोकप्रिय कैफे में जाएं।



- ◆ शहर घुमने के लिए लोकल टैक्सी, बस या पैदल वॉक किया जा सकता है।

2. एलिफेंट फॉल्स

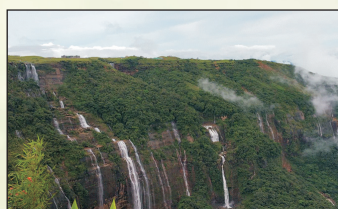
- ◆ शिलांग से एलिफेंट फॉल्स लगभग 12 कि.मी है, टैक्सी द्वारा 20-30 मिनट लगते हैं।



- ◆ फॉल्स तीन हिस्सों में बंटा है, हर लेवल पर सीढ़ियाँ हैं — आराम से चलना चाहिए।
- ◆ बरसात के मौसम में झरने का दृश्य और रौनक सबसे ज्यादा होती है।
- ◆ यहाँ आसपास घना जंगल, पिकनिक स्पॉट और फोटोग्राफरों के लिए सुंदर लोकेशन हैं।
- ◆ टिकट लेकर अंदर एंट्री पाते हैं, कैफे व वॉशरूम जैसी बुनियादी सुविधाएं पास में उपलब्ध हैं।

3. चेरापूंजी

- ◆ शिलांग से चेरापूंजी की दूरी करीब 54-60 कि.मी (ड्राइविंग समय 2-2.5 घंटे) है, बीच में बहुत सुंदर घाटियां और बादल भरे नजारे मिलते हैं।
- ◆ यहां नोहकलिकाई फॉल्स (भारत का सबसे ऊंचा झरना), सेवन सिस्टर फॉल्स, मावसमाई गुफा, इको पार्क और शानदार हरियाली का आनंद लें।
- ◆ मावसमाई गुफा चेरापूंजी से केवल 6 कि.मी पर है, यह एक रोमांचक लाइमस्टोन केवक्सप्लोरिंग का मजा देती है।
- ◆ चेरापूंजी में ट्रेकिंग, नेचर वॉक, स्थानीय भोजन का स्वाद लेना उन्नत अनुभव है।
- ◆ रात्रि में रुकने के लिए हॉमस्टे, ईको रिसॉर्ट या छोटे होटल यहाँ मिल जाते हैं।



4. मावफनलुर

- ◆ पश्चिमी खासी हिल्स में शिलांग से 75-80 कि.मी, टैक्सी/कार से 2.5-3 घंटे का रास्ता।

- ◆ गाँव की शांत झीलें, ग्रीन फॉरेस्ट, ग्रामीण जीवन यहाँ का मुख्य आकर्षण है।
- ◆ फिशिंग, बटरफ्लाई वॉचिंग, और ट्रेकिंग का आनंद लें। यहाँ के होमस्टे में खासी भोजन का स्वाद ले सकते हैं।
- ◆ यात्रा के दौरान पहाड़ी रास्तों, झरनों और गाँवों का दृश्य शानदार है।
- ◆ दिन के अंत में मावफनलुर में रात बिताएँ।

5. डॉकी और मावल्यान्ग

- ◆ मावफनलुर/चेरापूंजी से डावकी लगभग 80-90 कि.मी है। शिलांग से सीधा भी जा सकते हैं।
- ◆ डॉकी की उमंगोट नदी का कांच-सा साफ पानी, नाव की सवारी करें।
- ◆ डॉकी से मौलिनोंगगाँव सिर्फ 30 कि.मी — एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव, ग्रामीण जीवन और लिविंग रूट ब्रिज का अनुभव।
- ◆ दोनों जगह पारंपरिक खाना, फोटोग्राफी और गाँव के गार्डन देखें।
- ◆ डॉकी में एक दिन बिताकर मौलिनोंग में रुकें।



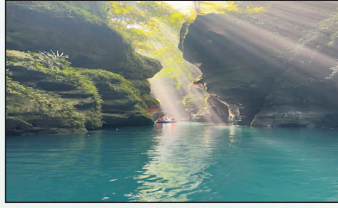
6. जोवाई व जयंतिया हिल्स

- ◆ डॉकी/मौलिनोंग से 65-70 कि.मी, या चेरापूंजी से भी इसी दूरी पर।
- ◆ सिंद्रा फॉल्स, थडलास्केन झील, प्राचीन मोनोलिथ देखें।
- ◆ आदिवासी बाजार में शिल्पकला, बांस-बेंत की वस्तुएं जरूर खरीदें।
- ◆ जोवाई में शांत झील किनारे वॉक करें, प्रकृति को नजदीक से महसूस करें।
- ◆ दिन के अंत में जोवाई में रुक सकते हैं।

7. दक्षिण गारो हिल्स व वारी चोरा

- ◆ जोवाई/शिलांग से वारी चोरा की दूरी लगभग 270-280 कि.मी है। यह सबसे ऑफबीट, एडवेंचर स्थल है - सफर 8-9 घंटे लग सकता है।
- ◆ सबसे पहले बाघमारा कस्बा जाएं, वहाँ से लोकल टैक्सी या मोटरसाइकिल से वारी चोरा की ओर बढ़ें।

- यहाँ पहाड़ी घाटी, जंगल ट्रेकिंग, रहस्यमयी झरने, और नदी किनारे कयाकिंग का अनुभव लें।
- गारो जनजाति के गाँवों में रुककर पारंपरिक संस्कृति और भोजन का आनंद लें।
- इस क्षेत्र में प्रकृति के साथ शांति, ट्रेकिंग एवं साहसिक गतिविधियाँ विशेष हैं। वारी चोरा में रात बिताकर अगली सुबह वापसी करें।



ऐतिहासिक स्थल

- सिजू गुफा: भारत की प्राचीन लाइमस्टोन गुफाओं में से एक, चमगादड़ों के लिए प्रसिद्ध।
- लिविंग रूट ब्रिज: 200 साल पुराना प्राकृतिक पुल, खासी जनजाति की अनुपम कृति।
- डॉन बॉस्को म्यूजियम: खासी, जयंतिया, गारो आदि जनजातियों के वस्त्र, हथियार, उपकरण मेघालय की संस्कृति और त्योहार।
- खासी, गारो, जयंतिया जनजातियाँ राज्य की पहचान।



त्योहार:

- शाद सुक मिसीम: खासी जनजाति का स्वागत उत्सव।
- बेहदेनखलाम: जयंतिया समुदाय का महत्वपूर्ण त्योहार।
- वांगाला: गारो जनजाति का कृषि उत्सव।
- भाषाएँ: खासी, गारो, प्जार; इन्हें संरक्षित करने की खास कोशिशें हो रही हैं।
- लोकनृत्य, कला-शिल्प: बांस व बेंत की वस्तुएं, पारंपरिक वस्त्र।

मेघालय का फूड टूरिज्म

जादो: लाल चावल और पोर्क/चिकन के मांस के साथ बनी डिश, खासी समुदाय में प्रसिद्ध।

पुमालोई: चावल का पाउडर, लकड़ी के बर्तन में पका, स्ट्रीट फूड के रूप में लोकप्रिय।

नखम बिची: सूखी मछली और सब्जियों के साथ बनी सूप जैसी डिश।

दोह-खलीह: पारंपरिक मसालेदार मांस की डिश, बिची के साथ।

मिनिल सोंगा: चावल और मसालों को बांस में भरकर स्टीम किया, खासी-गारो में प्रसिद्ध।

तुनग्रीम्बाई: सोयाबीन से बनी स्वादिष्ट पारंपरिक डिश।

नई विकास संभावनाएँ

पर्यटन व इंफ्रास्ट्रक्चर:

- और अधिक ईको-फ्रेंडली रिसॉर्ट्स, होमस्टेज और ग्रामीण टूरिज्म प्रमोट किया जा सकता है।
- स्थानीय कलाकारों, शिल्पकारों, रसोइयों को प्रशिक्षित कर उनकी आय बढ़ाई जा सकती है।
- सांस्कृतिक त्योहार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमोट किया जा सकता है।
- ट्रेकिंग, एडवेंचर स्पोर्ट्स, बाइक और हाइकिंग ट्रेल्स विकसित हो सकते हैं।

भोजन व संस्कृति:

- फूड फेस्टिवल्स एवं कुकिंग क्लासेस आयोजित कर बाहरी पर्यटकों को स्थानीय भोजन सिखाया जा सकता है।
- ट्राइबल भाषाओं के संरक्षण के लिए टेक्नोलॉजी का उपयोग बढ़ाया जाए।

हस्तशिल्प एवं कला:

- बांस, कपड़ा, बेंत की वस्तुओं की ब्रांडिंग और ऑनलाइन मार्केटिंग।
- युवा पीढ़ी को पारंपरिक शिल्पकला व गीत-नृत्य सिखाने के लिए कार्यशालाएँ।

उपसंहार

मेघालय की यात्रा का आरंभ शिलांग से होता है, जिसे पूर्वोत्तर का स्कॉटलैंड कहा जाता है। यहाँ की बारिश भरी ठंडी वायु, पोलो ग्राउंड, वार्ड्स लेक और उमियाम झील जैसी दर्शनीय स्थल आत्मा को ताजगी प्रदान करते हैं। एलिफेंट फॉल्स की तीन तहों से बहती जलधारा यात्रियों के मन को मोह लेती है। शिलांग

से करीब दो घंटे दक्षिण में, चेरापूंजी स्थित है, जहां भारी वर्षा लुभावने जलप्रपात और जीवित जड़ पुलों की अनोखी बनावट देखने को मिलती है। मावसमाई गुफाएं और सात बहन झरने एडवेंचर प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

शहरी भागदौड़ से दूर, मावफनलुर का हरियाली से घिरा गाँव अपनी शांत झीलों और स्थानीय संस्कृति के साथ एक प्राकृतिक स्वर्ग है। डाँकी की कांच जैसी नदी और मावल्यान्नांग, एशिया का सबसे साफ-सुथरा गाँव, यह यात्रा को और भी यादगार बनाते हैं। जोवाई व जयंतिया हिल्स में प्राचीन मोनोलिथ्स, झरने और आदिवासी बाजार संस्कृति और परंपराओं का परिचय देते हैं।

दक्षिण गारो हिल्स में स्थित वारी चोरा एक छिपा हुआ रत्न है, जहाँ प्रकृति के खूबसूरत जंगल, घाटियाँ, झरने, और नदी के किनारे रोमांचक ट्रेकिंग का आनंद लिया जा सकता है। यह क्षेत्र स्थानीय गारो जनजाति की संस्कृति एवं पारंपरिक जीवन को देखने का भी अनूठा अवसर प्रदान करता है।

मेघालय यात्रा न केवल सुंदर दृश्यों का आनंद देती है, बल्कि यह जीवंत संस्कृति, पारंपरिक व्यंजन, और स्थानीय

त्योहारों के माध्यम से भारत की विविधता का जश्न भी है। जादोह जैसे व्यंजन, वांगाला जैसे उत्सव और जीवित जड़ पुल इस प्रदेश की शान हैं।

इस सम्पूर्ण यात्रा में प्राकृतिक सौंदर्य, साहसिक रोमांच, सांस्कृतिक समृद्धि एवं आत्मा को छू लेने वाली शांति का संगम होता है। मेघालय की हरी-भरी घाटियाँ, झरने, गुफाएं, स्वच्छ गाँव, और लोकतांत्रिक जनजातीय जीवन शैली हर यात्री को एक नई दुनिया में ले जाती हैं इसलिए यदि आप प्रकृति प्रेमी हैं या एक नया सांस्कृतिक अनुभव चाहते हैं, तो मेघालय की यात्रा आपके लिए स्वर्णिम अवसर है।

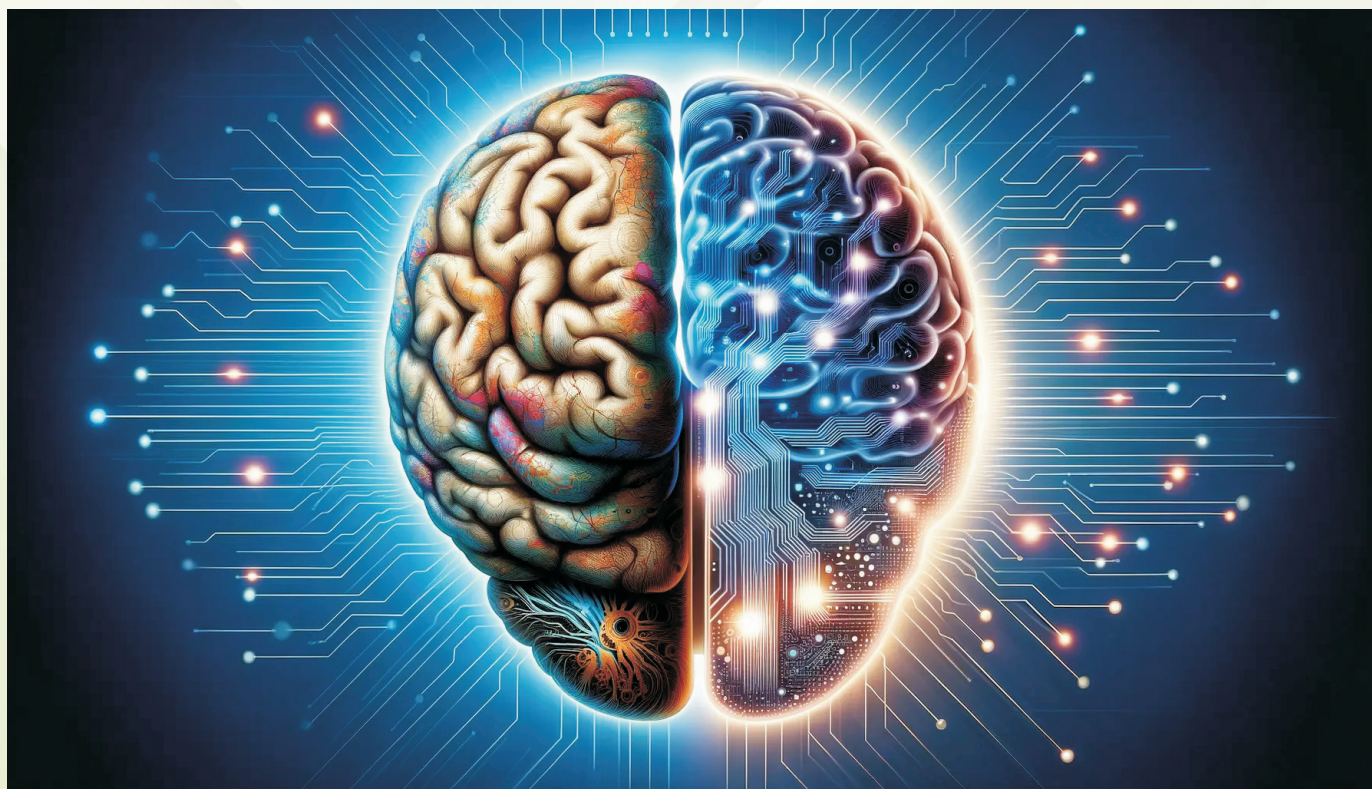
मेघालय की यह यात्रा आपको धरती के इस स्वर्ग में लेकर जाती है, जहाँ हर मोड़ पर प्रकृति की अनूठी छटा और जीवन की सरलता जगमगाती है। यात्रा के दौरान आपको हर दिन कुछ नया देखने, समझने और अनुभव करने का मौका मिलेगा, जो आपकी यादों में हमेशा के लिए संजोए रहेगा। □



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बनाम इंसानी बुद्धि



सुश्री पूनम
पत्नी- श्री संदीप, लेखाकार



भूमिका

21वीं सदी तकनीकी क्रांति की सदी है। इंसान ने विज्ञान और तकनीक की बदौलत वो कर दिखाया है, जो कभी कल्पनाओं में ही संभव था। इसी तकनीकी उन्नति की सबसे चर्चित देन है - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जहां एक ओर यह मानव जीवन को आसान बना रही है, वहीं दूसरी ओर यह एक गंभीर प्रश्न भी खड़ा कर रही है - क्या मशीनें इंसानों की बुद्धि से आगे निकल सकती हैं? यही संघर्ष

‘आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बनाम इंसानी बुद्धि’ का मुख्य केंद्र है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) क्या है?

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसी तकनीक है जिसके द्वारा मशीनों को इस प्रकार प्रोग्राम किया जाता है कि वे सोचने, समझने, निर्णय लेने और सीखने जैसी मानवीय क्रियाएँ कर सकें। इसका मुख्य उद्देश्य है - मशीनों को इतना बुद्धिमान बनाना कि वे मनुष्य के बिना भी निर्णय ले सकें।

उदाहरण:

- ◆ चैटबॉट्स
- ◆ गूगल असिस्टेंट,
- ◆ सेल्फ-ड्राइविंग कोर्स,
- ◆ चेहरे की पहचान करने वाली तकनीक,
- ◆ ई-कॉमर्स वेबसाइट पर सुझाव देने वाले एल्गोरिथ्म।

इंसानी बुद्धि क्या है ?

इंसानी बुद्धि प्रकृति की एक अनुपम देन है। यह केवल गणना या याद रखने की शक्ति नहीं, बल्कि कल्पना, अनुभव, भावनाओं, नैतिकता, संवेदना और विवेक का मिश्रण है। इंसानी मस्तिष्क दुनिया का सबसे जटिल जीवित कंप्यूटर है।

इंसानी बुद्धि में शामिल हैं:

- ◆ सहानुभूति (Empathy)
- ◆ रचनात्मकता (Creativity)
- ◆ अनुभव पर आधारित निर्णय क्षमता (Judgment)
- ◆ नैतिकता और भावनात्मक सोच

ए आई की शक्ति: फायदे और उपयोग

1. स्पीड और सटीकता: मशीनें बड़ी मात्रा में डेटा को तेजी से प्रोसेस करती हैं।
2. 24x7 कार्य क्षमता: मशीनें थकती नहीं, आराम नहीं मांगतीं।
3. डाटा विश्लेषण में निपुण: बिजनेस, मेडिकल रिसर्च और वैज्ञानिक विश्लेषण में तेज निर्णय।
4. मानव त्रुटियों में कमी: इंसान से होने वाली गलती ए आई से कम होती है।
5. रोग पहचान और उपचार: ए आई आज कैंसर, न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर आदि की पहचान में सक्षम है।
6. ड्राइविंग और लॉजिस्टिक्स: सेल्फ-ड्राइविंग कार, ऑटोमैटिक ट्रैफिक कंट्रोल, रोबोटिक डिलीवरी सिस्टम।

इंसानी बुद्धि की अद्वितीय विशेषताएँ

1. नैतिकता और भावनाएं: इंसान अच्छे-बुरे, सही-गलत का निर्णय ले सकता है।

2. कल्पनाशक्ति: इंसान नई चीजें सोच सकता है जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं थीं।
3. संवेदनशीलता: किसी की पीड़ा को महसूस करना और उसके अनुसार व्यवहार करना।
4. अनुभव आधारित ज्ञान: जिंदगी के अनुभवों से व्यक्ति सीखता है, जो मशीनें नहीं कर सकतीं।
5. रिश्तों को समझना: इंसान रिश्तों की जटिलता और भावना को समझ सकता है, ए आई नहीं।

क्या ए आई इंसानी बुद्धि से आगे निकल सकता है ?

यह सवाल सिर्फ तकनीकी नहीं, बल्कि दार्शनिक और नैतिक भी है। वर्तमान में:

- ◆ ए आई कुछ मामलों में इंसानों से तेज है (जैसे गणना, डेटा प्रोसेसिंग)।
- ◆ लेकिन ए आई की सोच सीमित और प्रोग्रामिंग पर आधारित होती है।
- ◆ इंसान भावनाओं और नैतिकता के आधार पर निर्णय ले सकता है, जो मशीनों के लिए असंभव है।

ए आई के खतरे और चुनौतियाँ

1. रोजगार पर असर: ए आई से कई नौकरियाँ ऑटोमेट हो रही हैं – जिससे बेरोजगारी बढ़ने का खतरा है।
2. डेटा गोपनीयता और नियंत्रण: ए आई अगर गलत हाथों में गया, तो इसका दुरुपयोग हो सकता है।
3. नैतिक समस्याएं: अगर मशीनें निर्णय लेंगी, तो नैतिक और मानवीय मूल्य कहाँ रहेंगे ?
4. मानवता से दूरी: लोग मशीनों पर इतना निर्भर न हो जाएं कि इंसानी संबंध ही खो जाएं।
5. 'सुपरइंटेलिजेंस' का डर: कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि अगर ए आई में आत्म-सीखने की क्षमता बहुत बढ़ जाए, तो वह इंसानों को खतरे में डाल सकता है।

भविष्य की दिशा: संतुलन जरूरी है

ए आई का विकास रोक नहीं जा सकता – और इसे रोकना चाहिए भी नहीं। लेकिन यह जरूरी है कि:

- ♦ इसका प्रयोग इंसान की मदद के लिए हो, न कि उसके स्थान पर।
- ♦ मानव मूल्य, नैतिकता, भावनाएँ और नियंत्रण बनाए रखा जाए।
- ♦ ए आई को 'सहायक' की भूमिका में रखा जाए, 'स्वामी' की नहीं।

सरकारों और समाज की भूमिका

1. नीतियाँ बनाना: सरकारों को ऐसी नीति बनानी चाहिए जिससे ए आई का जिम्मेदार इस्तेमाल हो।
2. शिक्षा में बदलाव: शिक्षा प्रणाली को ऐसा बनाना चाहिए कि बच्चे रचनात्मक और नैतिक सोच वाले बनें, केवल तकनीकी ज्ञान पर निर्भर न रहें।
3. जागरूकता: आम लोगों को ए आई के फायदे और जोखिम दोनों की जानकारी दी जानी चाहिए।

ए आई और इंसानी सहयोग: भविष्य का नया मॉडल

जहाँ एक ओर लोग 'ए आई बनाम इंसानी बुद्धि' को प्रतिस्पर्धा के रूप में देखते हैं, वहीं आधुनिक विशेषज्ञ इसे 'ए आई प्लस Human Intelligence' के रूप में देखना पसंद करते हैं। यानी - इंसान और मशीन एक साथ मिलकर काम करें, ताकि:

- ♦ ए आई की स्पीड और डेटा एनालिसिस का लाभ मिले।
- ♦ और साथ ही इंसान की नैतिकता, समझ और रचनात्मकता का भी इस्तेमाल हो।

उदाहरण:

- ♦ चिकित्सा क्षेत्र में - ए आई MRI स्कैन की सटीक रिपोर्ट दे सकता है, लेकिन अंतिम निर्णय डॉक्टर ही लेते हैं, जो मरीज की सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिति को भी समझते हैं।
- ♦ कानून क्षेत्र में - ए आई पुराने मामलों की तुलना करके सुझाव दे सकता है, लेकिन न्याय का अंतिम फैसला न्यायाधीश ही लेते हैं।
- ♦ शिक्षा में - ए आई से बच्चा सीख सकता है, लेकिन

शिक्षक का मार्गदर्शन ही उसके नैतिक और सामाजिक विकास में सहायक होता है।

ए आई का प्रभाव - विभिन्न क्षेत्रों में

1. शिक्षा : ए आई आज वर्चुअल ट्यूटर, चैटबॉट और भाषा अनुवाद में मदद कर रहा है। परंतु एक शिक्षक का अनुशासन, प्रेरणा, और विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक संबंध ए आई नहीं दे सकता।
2. स्वास्थ्य: ए आई सटीक निदान और रिपोर्ट तैयार करने में सक्षम है। लेकिन मरीज की स्थिति को समझकर उसे मानसिक समर्थन केवल डॉक्टर या नर्स ही दे सकते हैं।
3. कला और साहित्य: ए आई चित्र बना सकता है, कविता लिख सकता है, परंतु उसमें जीवन का अनुभव, दर्द, प्रेम, और गहराई नहीं होती जो केवल एक इंसान ही व्यक्त कर सकता है।
4. सैन्य क्षेत्र: ए आई आधारित ड्रोन और हथियार बन चुके हैं, परन्तु निर्णय - 'गोली चलाना है या नहीं' - यह संवेदनशील कार्य आज भी इंसानी विवेक पर निर्भर है।
5. व्यवसाय: ए आई ग्राहक की पसंद जान सकता है, ट्रेंड पहचान सकता है, लेकिन ग्राहक के साथ संबंध बनाना एक मानवीय कला है।

ए आई की सीमाएं:

1. भावनात्मक अंधापन: ए आई को कोई भावना नहीं होती - न प्यार, न सहानुभूति, न करुणा।
2. नैतिक भ्रम: ए आई सही-गलत का निर्णय सिर्फ गणना से करता है, उसमें कोई नैतिक सोच नहीं होती।
3. कल्पनाशीलता की कमी: ए आई केवल पहले से दिए गए डेटा और एल्गोरिथ्म पर काम करता है - वह नई अवधारणा नहीं गढ़ सकता।
4. सीमित संदर्भ समझ: ए आई शब्दों का अर्थ निकाल सकता है, पर कभी-कभी उसका भावार्थ नहीं समझ पाता।

ए आई पर नियंत्रण - क्यों जरूरी है?

ए आई जितना शक्तिशाली बन रहा है, उतना ही जरूरी हो गया है इसे नियंत्रित और नैतिक रूप से चलाना।

कुछ कारण:

- ♦ हैकिंग और साइबर क्राइम का खतरा
- ♦ भविष्य में ए आई आधारित हथियारों का युद्ध
- ♦ सोशल मीडिया में मनोवैज्ञानिक प्रभावों का बढ़ना
- ♦ मानवाधिकारों का हनन अगर ए आई से फैसले लिए जाने लगे

समाधान:

1. ए आई नीतियाँ और नियंत्रण कानून
2. ए आई में पारदर्शिता
3. मानव के हाथ में अंतिम निर्णय का अधिकार होना जरूरी है
4. ए आई सिस्टम में नैतिक मानकों का समावेश

क्या ए आई आत्म-जागरूक हो सकता है ?

यह सवाल सबसे बड़ा दार्शनिक और वैज्ञानिक प्रश्न बन गया है। क्या कभी ऐसा ए आई बन सकता है जो खुद के अस्तित्व को समझे, खुद को बचाएँ, निर्णय ले, और स्वतंत्र सोच रखे ?

अब तक:

- ♦ ए आई आज 'स्मार्ट' जरूर हुआ है, लेकिन वह 'स्वयं को जानने वाला' नहीं है।
- ♦ उसे आदेश मिलते हैं - वह उन्हें पूरा करता है।
- ♦ वह अपने उद्देश्य खुद नहीं चुन सकता।

भविष्य में:

- ♦ कई वैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि अगर ए आई को पूर्ण 'स्वतंत्र सोच' मिल गई, तो वो सुपरइंटेलिजेंस बन सकता है - जो इंसान के लिए खतरा भी बन सकता है।
- ♦ इसलिए शोधकर्ता इसके नैतिक और नियंत्रणात्मक ढांचे की बात करते हैं।

भारत और ए आई: एक उभरता युग

भारत में ए आई का तेजी से विकास हो रहा है, खासकर निम्नलिखित क्षेत्रों में:

1. डिजिटल हेल्थ मिशन
2. स्मार्ट सिटीज
3. एग्रीकल्चर में ए आईका उपयोग (फसल विश्लेषण, मिट्टी जाँच)
4. शिक्षा में ऑनलाइन लर्निंग टूल्स
5. न्यायपालिका में केस ट्रैकिंग ए आई सिस्टम्स

भारत सरकार ने नीति आयोग के तहत 'ए आई फार ऑल' नामक कार्यक्रम चलाया है - जिसमें ए आई को समावेशी, सुरक्षित और सुलभ बनाया जा रहा है।

ए आई और मानवीय मूल्य: एक जरूरी संतुलन

ए आई हमें गति देगा - लेकिन मानवीय मूल्य हमें दिशा देंगे। अगर हम केवल तकनीकी उन्नति की ओर बढ़ते हैं और भावनाओं, सहानुभूति और नैतिकता को भूल जाते हैं, तो यह विकास अधूरा होगा।

मानवता को बनाए रखने के लिए हमें चाहिए:

- ♦ शिक्षा में भावनात्मक बुद्धि को बढ़ावा
- ♦ ए आई इंजीनियर्स को नैतिक प्रशिक्षण
- ♦ समाज में ए आई साक्षरताका प्रचार
- ♦ बच्चों को इंसानियत और सह अस्तित्व के बारे में सीखाना

निष्कर्ष:

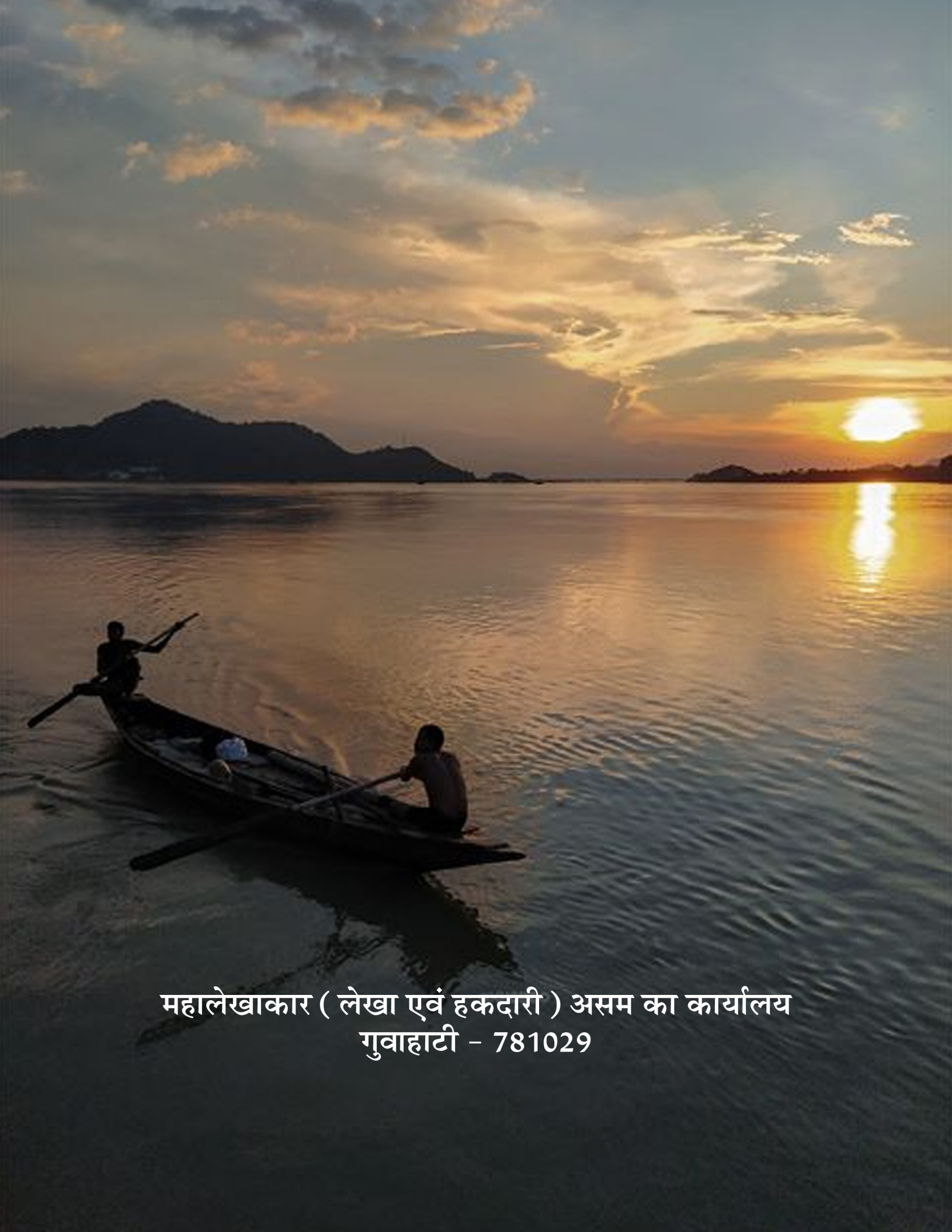
'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बनाम इंसानी बुद्धि' की यह प्रतिस्पर्धावास्तव में 'बना' नहीं, बल्कि 'सहयोग' का मामला होना चाहिए। मशीनें चाहे जितनी भी समझदार बन जाएं, वे कभी भी इंसानी दिल, भावनाओं और विवेक की बराबरी नहीं कर सकतीं। ए आई हमारी सहायता के लिए है, प्रतिस्थापन के लिए नहीं। आने वाला समय उन्हीं का होगा जो तकनीक को अपनाते हुए इंसानियत को प्राथमिकता देंगे। □

हिंदी पखवाड़ा-2024 की झलकियाँ





जय जय
माँ कामाख्या



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) असम का कार्यालय
गुवाहाटी - 781029